7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 स्वस्थ पेशे की बीमार तस्वीर

5 बच्चों के विवाद में भिड़े दो पक्ष

8 अमिताभ बच्चन के बाद सचिन तेंदुलकर को मिला गोल्डन टिकट, जय शाह ने विश्व कप के लिए किया आमंत्रित

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 7 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 11 सितम्बर, 2023

घोसी उपचुनाव- लोकसभा चुनाव से पहले जीत से इंडिया को ताकत

सहयोगी दलों को मिलेगी ऊर्जा, एनडीए के लिए बड़ा झटका

लखनऊ। घोसी उपचुनाव की जीत ने इंडिया गठबंधन को आत्मविश्वास से भर दिया है। वहीं, भाजपा के सहयोगी दलों का दावा कमजोर होगा। वहीं, जीत के बाद अखिलेश यादव के बयान से साफ है कि लोकसभा चुनाव में इंडिया फिर एनडीए को हराने के लिए पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरेगा। घोसी सीट के उपचुनाव के नतीजे ने विपक्षी गठबंधन इंडिया को बड़ी ताकत दी है। वहीं, भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को आत्ममंथन के लिए विवश किया है। भले ही नतीजा सिर्फ एक सीट का हो, लेकिन इसकी चर्चा लोकसभा चुनाव तक रहेगी।

इंडिया के गठन के बाद यूपी में हुए पहले चुनाव में विपक्षी दलों ने पूरी ताकत लगाई। सपा प्रत्याशी सुधाकर सिंह को कांग्रेस, रालोद, आप और अपना दल कमेरावादी ने भी समर्थन दिया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सुधाकर सिंह की बड़े अंतर से जीत ने न सिर्फ सपा को ऊर्जा दी है, बल्कि विपक्षी गठबंधन को मजबूती दे सकता है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर अब इंडिया के घटक दल अपने गठबंधन को मजबूत करने के लिए सीटों के बंटवारे में अड़ियल रुख के बजाय समझौतावादी रास्ता अपनाएंगे। इतना ही नहीं जो छोटे विपक्षी दल अब तक इंडिया में शामिल होने से बच रहे थे, वह भी गठबंधन का हिस्सा बन सकते हैं।

अखिलेश बोले– सिर्फ सपा का नहीं, इंडिया का प्रत्याशी जीता

घोसी उपचुनाव से भविष्य की राजनीति का अंदाजा सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के एक्स (पूर्व नाम ट्विटर) पर दिए बयान से लगाया जा सकता है। अखिलेश ने कहा कि घोसी ने सिर्फ सपा का नहीं, बल्कि इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी को जिताया है। अब यही आने वाले कल का भी परिणाम होगा। यूपी एक बार फिर देश में सत्ता के परिवर्तन का अगुआ बनेगा। उन्होंने कहा कि भारत ने इंडिया को जिताने की शुरुआत कर दी है और यह देश के भविष्य की जीत है। अखिलेश के बयान से साफ है कि लोकसभा चुनाव में इंडिया फिर एनडीए को हराने के लिए पूरी ताकत के साथ मैदान में उतरेगा।

सीटों के बंटवारे पर पड़ेगा असर

जानकारों का मानना है कि उपचुनाव के नतीजों से लोकसभा चुनाव में सीटों के बंटवारे में अपना दल, सुभासपा और निषाद

पार्टी की भागीदारी पर भी असर पड़ेगा। यदि उपचुनाव भाजपा जीतती तो राजभर और निषाद मजबूती से मोलभाव कर पाते।

भाजपा के वोटबैंक में लगी सेंध, सपा का मजबूत हुआ

घोसी के नतीजे बताते हैं कि सपा ने भाजपा के परंपरागत ठाकुर, भूमिहार, वैश्य के साथ राजभर, निषाद और कुर्मी मतदाताओं में अच्छी खासी सेंध लगाई है। वहीं सपा का परंपरागत यादव और मुस्लिम वोटबैंक तो उसके साथ मजबूती से खड़ा रहा। स्वार उपचुनाव में मिली हार के बाद माना जा रहा था कि मुस्लिम वोट सपा से खिसक रहा है, लेकिन घोसी में मिली जीत ने सपा के साथ मजबूती से होने की बात फिर साबित की है।

भाजपा को सोचना पड़ेगा

राजनीतिक विश्लेषक जेपी शुक्ला का मानना है कि घोसी उपचुनाव के नतीजे पूरे लोकसभा चुनाव की नतीजों पर असर डालेंगे यह कहना उचित नहीं हैं। लेकिन यूपी में इसका असर होगा। खासतौर पर पूर्वांचल की सीटों पर भाजपा को सोचना पड़ेगा। भाजपा के लिए यह संदेश भी है कि वह इतना ताकतवर न माने कि राजनीति में वैसा ही होगा, जैसा वह चाहेगी।

भाजपा की हार के कारण

- दलित वोट उम्मीद के हिसाब से न मिलना। बड़ी तादाद में क्षत्रिय सजातीय उम्मीदवार के साथ चले गए।
- साढ़े छह साल में चौथे विधानसभा चुनाव से राजनीतिक अस्थिरता का माहौल।
- एनडीए के सहयोगी दलों का सजातीय वोट बैंक में पकड़ साबित न कर पाना।
- रामपुर और आजमगढ़ उपचुनाव जैसा माहौल का न बन पाना।

सपा की जीत के कारण

- सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का खुद उप चुनाव के मैदान में उतरना और सुधाकर सिंह का स्थानीय होना।
- मुस्लिम-यादव फैक्टर का मजबूत होना।
- बसपा के मैदान में न होने से दलित मतदाताओं के बीच पैठ बढ़ाने में कामयाबी
- स्थानीय मुद्दों का सपा के पक्ष में होना।

काम नहीं आए जातीय समीकरण

घोसी में करीब ५५ हजार राजभर, १६ हजार निषाद और १४ हजार कुर्मी मतदाता हैं। भाजपा ने सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर और निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद की सभाएं, रैलियां और बैठकें कराईं। लेकिन चुनाव आंकड़े बता रहे हैं कि कुर्मी, राजभर और निषाद मतदाताओं ने स्थानीय उम्मीदवार को महत्व देते हुए मतदान किया है। यही नहीं करीब ८ हजार ब्राह्मण और तकरीबन १५ हजार क्षत्रिय भी सपा की ओर चले गए।

अवसरवादी और बाहरी का मुद्दा दारा की हार की बड़ी वजह

उपचुनाव में सपा ने भाजपा प्रत्याशी दारा सिंह चौहान के खिलाफ अवसरवादी और बाहरी होने का मुद्दा उठाया था। सपा ने मतदाताओं को बताया कि १६ महीने पहले चुनाव जीतने के लिए दारा सिंह भाजपा छोड़कर सपा में आए थे। चुनाव जीतने के बाद अब मंत्री बनने के लिए फिर भाजपा में चले गए हैं। इसे दारा की हार की बड़ी वजह मानी जा रही है। आजमगढ़ के मूल निवासी दारा सिंह २०१७ में मऊ की मधुबन सीट से चुनाव लड़े थे। तब वे बसपा छोड़कर भाजपा में आए थे। जब २०२२ का चुनाव आया तो वे भाजपा छोड़ सपा में चले गए और मऊ की घोसी सीट से चुनाव लड़े और जीते। उपचुनाव में दारा फिर घोसी से चुनाव लड़े, लेकिन इस बार वे सपा की जगह भाजपा से थे।

सभी 72 विभागों को 22 दिन में खर्च करने होंगे 15 हजार करोड़, जारी किए गए निर्देश

लखनऊ। विभागों की कंजूसी पर शासन ने चिंता जताई है। सभी विभागों को ज्यादा से ज्यादा खर्च करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्हें २२ दिन में १५ हजार करोड़ रुपये खर्च करने का लक्ष्य दिया गया है। विभागों की कंजूसी पर शासन ने चिंता जताई है। सभी विभागों को ज्यादा से ज्यादा खर्च करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्हें २२ दिन में १५ हजार करोड़ रुपये खर्च करने का लक्ष्य दिया गया है। इस संबंध में अपर मुख्य सचिव वित्त दीपक कुमार ने शुक्रवार को सभी ७२ विभागों को निर्देश जारी किए हैं।शासन का मानना है कि पूंजीगत खर्च से अवस्थापना व विकास का रास्ता खुलता है, जिससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। इस वित्त वर्ष में पूंजीगत व्यय के लिए लगभग १.४७ लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है। कोषागार से प्राप्त रिपोर्ट के मुताबिक अगस्त तक

पूंजीगत व्यय पर सिर्फ २३,३४८ करोड़ खर्च किए गए हैं जो इस मद के बजट का सिर्फ २३ फीसदी है। इतने कम खर्च पर शासन ने चिंता जताई है। क्योंकि कम खर्च का असर केंद्र से मिलने वाली विशेष मदद पर पड़ेगा।

पूंजीगत खर्च को बढ़ावा देने के लिए केंद्र ने राज्यों के लिए ये योजना जारी की है। इसके तहत ५० साल के लिए ब्याज मुक्त ऋण दिया जाता है। इस योजना के तहत यूपी को १७,६३६ करोड़ आवंटित किए गए हैं। इसमें से ११६६० करोड़ रुपये राज्य को मिल चुके हैं। अब शेष राशि प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार को सितंबर तक पूंजीगत व्यय के लिए निर्धारित बजट में से ३७,४१५ करोड़ रुपये खर्च करने होंगे जबकि खर्च हुए हैं २३,३४८ करोड़। अब केवल २२ दिन बचे हैं और सरकार को करीब १५ हजार करोड़ रुपये खर्च करने हैं। इसके बाद ही केंद्र सरकार शेष ६ हजार करोड़ रुपये राज्य सरकार को जारी करेगी। इसे देखते हुए वित्त मंत्री ने कड़े निर्देश दिए हैं कि सभी विभाग इस महीने आवंटित बजट का कम से कम ५० फीसदी हर हाल में खर्च करें।

सम्पादकीय

फटा पोस्टर, निकला मोदी!

शिवपूजन सहाय ने कहानी का प्लाट में लिखा था, अमीरी की कब्र पर पनपी गरीबी बड़ी जहरीली होती है। लेकिन जी-२० के आयोजन से पहले गरीब बस्तियां जिस बेरहमी से उजाड़ी गईं, वो गरीबी की कब्र पर अमीरी की घास है, जो उससे कई गुणा अधिक जहरीली है। आप उजड़े हुए लोगों का रूदन सुनिये, दिल कांप जाता है। दिल्ली में लुटियन की सड़कें पोस्टरों से पटी पड़ी है। विदेशी अतिथियों के लिए तय मार्ग एयरपोर्ट से शुरू और राजघाट पर जाकर समाप्त होता है। बीच में आता है लुटियन, बाकी सड़कें बकवास। भलस्वा, गाजीपुर, ओखला के कूड़ा पहाड़, पूर्वी-पश्चिमी दिल्ली की मलिन बस्तियों, बजबजाते नालों को मत देखिये। यह देखिये कि भक्त कैसे लहालोट हैं। मोदी विश्वगुरू हैं। महान विचारक। बुद्ध, महावीर, अरस्तु, प्लुटो, माओ, मार्क्स, स्वामी विवेकानंद, टाम बटलर से भी बड़े। मोदी इस धरती के महानायक के रूप में कुछ इस तरह प्रस्तुत हैं, कि जी-२० छोटा पड़ गया।

आखिरी बार विश्व पुस्तक मेले में मैं प्रगति मैदान गया था। यह लोकेशन तब मोहनजोदड़ो हडप्पा बना हुआ था। देखना है, तो अब जाकर देखिये भारत मंडपम के जलवे। न भूतो न भविष्यति। जब से यह देश जन्मा, इतना दिव्य और भव्य आयोजन किसी नेता ने नहीं किया था। जो दिवंगत हो गये, और जो वैकुंठधाम प्रस्थान करने के वास्ते प्रतीक्षारत पूर्व प्रधानमंत्री हैं, उन्हें भी इसका अफसोस होगा कि इस तरह का विराट समारोह उन्होंने कुर्सी पर रहते क्यों नहीं किया? दुनिया का सबसे बड़ा इन्डोर ह ल, समिट के लिए विदेश से आया झूमर, ग्राउंड जीरो पर खड़े रिपोर्टर दीदे फाड़कर देख रहे हैं, लिख रहे हैं, कमेंट कर रहे हैं।

मदारी का तमाशा देखना हो तो उन बयानों पर गौर कीजिए, जिसमें दावा ठोका जा रहा है कि दिल्ली को सुंदर हमने बनाया। केजरीवाल सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने खम ठोका कि हमने दिल्ली को ब्यूटीफुल बनाया। दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने पलटवार करते हुए कहते हैं कि सौंदर्यीकरण का ६५ प्रतिशत केंद्र सरकार के फांड से हुआ है। एनडीएमसी को केंद्र सरकार फं ड उपलब्ध कराती है। आईटीओ शहीदी पार्क, राजघाट पर सौंदर्यीकरण, रिवरसाइड बेड, धौला कुआं से एयरपोर्ट तक सौंदर्यीकरण, यह सब केंद्र सरकार के फंड से एलजी की देखरेख में की गई है। बीरेंद्र सचदेवा ने बयान दिया कि केंद्र सरकार ने अब तक जी-२० पर ४,०६४ करोड़ रुपये खर्च किए हैं, जबकि केजरीवाल सरकार ने केवल ५१ करोड़ रुपये खर्च किए हैं। मगर, दिल्ली को सुंदर बनाने का दावा करने वाले नेताओं-नौकरशाहों से कोई पूछे कि पूर्वी-पश्चिमी और उत्तरी दिल्ली को बदसूरत बना रहने देने की जिम्मेदारी किसकी है? सवाल पूछियेगा, वो बगलें झांकने लगेंगे। सचदेवा के बयानों से एक बात समझ में आती है कि केवल दिल्ली को संवारने पर ४,०६४ करोड़ स्वाहा हुए हैं। देशभर में जी-२० के नाम पर जितने आयोजन हुए, उसपर केंद्र सरकार ने कितने खर्च किये, यह जानना दिलचस्प होगा। हमें उस समय का इंतजार रहेगा, जब सीएजी जैसी संस्था इसका ब्योरा देगी कि जी-२० के नाम पर टैक्स पेयर्स के पैसे का कितनी बेरहमी से दुरूपयोग हुआ है। जी-२० के आयोजन पर १० करोड़ ड लर से अधिक का खर्च आने का अनुमान है। देश के ५० से अधिक शहरों में जी-२० शिखर सम्मेलन से पहले लगभग २०० बैठकों का आयोजन हो चुका है। इनमें योग, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा मोदी मन भावे वाले स्वादिस्ट भारतीय भोजन का मेन्यू भी शामिल रहा है।

पिछले एक साल से देश का कोई कोना नहीं छूटा जहां जी-२० का डंका नहीं बजाया गया। जी-२० के जुनून में अखबारों में विज्ञापन, सड़कों पर पोस्टर-बैनर, विशालकाय एलईडी स्क्रीन से लेकर ई-रिक्शा तक को नहीं छोड़ा। इसके सिंबल को ध्यान से देखिये, खिलते हुए कमल पर टिका संपूर्ण ब्रह्मांड। मित्रों, कमल किस पार्टी का चुनाव चिह्न है? इवेंट मैनेजरों ने जी-२० को भी चुनावी बना दिया। पीएम मोदी जी-२० के पोस्टर ब्वाय बने हुए हैं, उनके विराट स्वरूप को उकेर कर पूरी दुनिया को बताया जा रहा है कि पीएम मोदी की वजह से भारत की पहचान विश्व मंच पर है। जी-२० का अगला सम्मेलन २०२४ में ब्राजील में, और २०२५ में दक्षिण अफ्रीका में होना तय है। क्या वहां भी दिल्ली जैसा दिखावा होगा? शिवपूजन सहाय ने श्कहानी का प्ल ट श में लिखा था, श्अमीरी की कब्र पर पनपी गरीबी बड़ी जहरीली होती है।श लेकिन जी-२० के आयोजन से पहले गरीब बस्तियां जिस बेरहमी से उजाड़ी गईं वो गरीबी की कब्र पर अमीरी की घास है, जो उससे कई गुणा अधिक जहरीली है। आप उजड़े हुए लोगों का रूदन सुनिये, दिल कांप जाता है। फेंके हुए बर्तन और गूदडी समेटती बेसहारा औरतें बद्दुआएं दे रही हैं, लेकिन बेहिस शासन पर कोई असर नहीं।

जुलाई २०२३ का अंतिम महीना था, जब आवास और शहरी मामलों के कनिष्ठ मंत्री कौशल किशोर ने संसद को बताया कि १ अप्रैल से २७ जुलाई के बीच दिल्ली में बस्तियां ढहाने के ४६ अभियान चलाये गये, जिसमें २३० एकड़ सरकारी जमीन को वापिस लिया गया है। मंत्री कौशल किशोर ने संसद में सफेद झूठ बोला कि जी-२० के लिए एक भी मकान नहीं तोड़ा गया है। आप इन इलाकों में जाइये, तो कहानी कुछ और है। दिल्ली के भैंरो मार्ग स्थित जनता कैंप में जिनके मकान टूटे, उन्हें झांसा दिया गया था कि जी-२० शिखर समारोह से गरीबों के हक में कुछ होगा, यहां से उजड़े बेघरों को पीएम मोदी मकान देंगे। भैंरो मार्ग जनता कैंप के भूतपूर्व हो चुके निवासी मोहम्मद शादाब ने एक समाचार एजेंसी से कहा कि जो कुछ हो रहा है, वह तो बिल्कुल उलटा है। बड़े लोग आएंगे, हमारी कब्र पर बैठेंगे, और खाएंगे। उजड़ चुकी बस्तियां पीएम मोदी के गगनचुंबी कटआउट्स, नियोन साइन और एलईडी लाइट्स से गुलजार हैं। कोई कह नहीं सकता कि कुछ हफ्ते पहले यहां टाट में पैबंद लगाकर लोग अपना जिस्मो-जान छिपाते थे। यह है मोदी का भारतवर्ष, जब वो श्इंडिया-इंडियाश बघारते थे, उनके दिये नारे याद कीजिए-श्जहां झुग्गी-वहां मकान! दिल्ली हर का वीवीआईपी एरिया इस समय भिखारी मुक्त है। महानगर के मुख्य स्थानों से भिखारियों को हटा दिया गया है। दिल्ली में २० हजार ७१६ भिखारी दज हैं। मगर, यह पता नहीं चल पाया कि भिखारी गये कहां? पुलिस भी नहीं बताती कि भिखारी कहां तड़ीपार किये हैं? आपको ट्रंप की अहमदाबाद विजिट याद करनी पड़ेगी। उसी शैली में दिल्ली शहर की कई झुग्गी-झोपड़ियों को छिपाने के लिए उनके किनारे कपड़े लगाकर उन्हें ढंक दिया गया है। गरीबी छिपाने का गुजरात म डल जी-२० में भी काम आ गया।

लगभग एक हफ्ते से कामकाजी लोग अपने घरों पर दो से चार घंटे लेट पहुंच रहे हैं। सप्लाई वाली ट्रकों का दिल्ली सीमा में प्रवेश नहीं के बराबर है। जरूरत के सामान औने-पौने भाव में मिल रहे हैं। धूल-मिट्ठी, जाम, नाकेबंदी से परेशान लोग सदरे इंतजामिया से श्पारिवारिक संबंधश स्थापित करें भी, तो बला से। मोदी जी ने बोल तो दिया है-श्रूकावट के लिए खेद है।श धरती के भगवान ने इतना कह दिया, अमृत वाणी समझिये इसे। खाये-पीये-अघाये लोग एक हफ्ते की पिकनिक मनाने दिल्ली से बाहर निकल गये। जो दिल्ली में किन्हीं वजहों से हैं, लाख तकलीफों के बावजूद जी-२० को कुदरत का करिश्मा और मोदी का प्रताप मान रहे हैं। जी-२० के बहाने देश में अंगूठा छाप से लेकर उच्च शिक्षित लोगों तक को रोबोट बनाया जा सकता है, यह मोदी ने मुमकिन कर दिखाया है। १५-१६ नवंबर २०२२ को इंडोनेशिया के बाली में जी-२० की शिखर बैठक हुई थी। तब के घोषणापत्र को इंटरनेट से डाउनलोड करके पढ़ियेगा। कोविड के बाद जिस तरह से विश्वव्यापी गरीबी बढ़ी है, उसपर साझा चिंता व्यक्त की गई थी। घोषणापत्र में इसका अहद किया गया था कि हम सब मिलकर गरीबी को मिटायेंगे। इसका हस्ताक्षर करने वालों में भारत के माननीय प्रधानमंत्री मोदी भी थे। प्रश्न यह है कि क्या साल भर गरीबी मिटाने का लक्ष्य प्राप्त हो गया? हो गया, तभी तो जी-२० के आयोजन में भारत ने १० करोड़ ड लर से अधिक फूं क डाले। माले मुफ्त, दिले बेरहम। बाली घोषणापत्र के सारे ५२ बिंदुओं पर नजर दौड़ा लीजिए, कोविड और यूक्रेन युद्ध के बाद विश्व की भरभराती अर्थव्यवस्था को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की गई थी। फिर कोई अतिथि देश का नेता मोदी से क्यों नहीं पूछता कि शान दिखाने के वास्ते १० करोड़ डालर क्यों उड़ा डाले? हम यह भूल जाते हैं कि एशिया में आर्थिक संकट पैदा होने के कारण जी-२० अस्तित्व में आया था। जी-२० की पहली बैठक २००८ में वाशिंगटन डीसी में हुई थी। दुनिया के समृद्ध देशों के वित्त मंत्रियों व रिजर्व बैंक के गर्वनर तब जी-२० की बैठकों में शिरकत करते थे। बाद के वर्षों में शासन प्रमुखों की भागीदारी होने लगी। २०११ के बाद हर साल शिखर बैठक बारी-बारी से सदस्य देशों की अध्यक्षता में होने लगी। १९९९ में स्थापना वर्ष के बाद के कालक्रमों को ठीक से देखिये कि जी-२० शिखर बैठकों पर किस देश ने कितना खर्च किया। भारत ने सबकी लकीर छोटी कर दी है। हम पांच ट्रिलियन डालर के संकल्प को पूरा करें, न करें, अतिथि देशों को यह बताना है कि हम शाहखर्च थे, और रहेंगे। जी-२० दो ट्रैक में विभाजित है। फाइनांस ट्रैक और शेरपा ट्रैक। शेरपा ट्रैक का नेतृत्व शासन प्रमुखों के प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है। यहं षि, भ्रष्टाचारविरोधी, जलवायु, डिजिटल अर्थव्यवस्था, शिक्षा, रोजगार, ऊर्जा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, पर्यटन, व्यापार और निवेश जैसे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित है। फाइनांस ट्रैक का नेतृत्व वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक गवर्नर करते हैं, जो राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों के निस्बतन है। फाइनांस ट्रैक से संबंधित कार्य समूह वैश्विक अर्थव्यवस्था, अधोसंरचना, वित्तीय विनियमन, वित्तीय ढांचा, अंतरराष्ट्रीय कराधान पर केंद्रित रहते हैं। सवाल यह है कि भारत फाइनांस ट्रैक और शेरपा ट्रैक की अवधारणाओं को आगे बढ़ाने में कितना सफ ल रहा है? उत्तर पूछिये तो अधिकारी कुछ गोल-गोल धुमाने लगते हैं, जिससे लगता है कि कोविड और यूक्रेन युद्ध के बाद हम अपनी अर्थव्यवस्था को सही से संभालने में चीन के मुकाबले अब भी काफी पीछे चल रहे हैं।

पानी को सहेजने की परम्परा

पानी सरीखे बुनियादी संसाधन को लेकर क्या किया जाए? अव्वल तो जलस्रोतों को चिन्हित करके उनके संरक्षण, प्रबंधन के लिये ग्रामसभा में चर्चा कर इसकी जिम्मेदारी गांव समिति को दी जाए। दूसरे, समाज के पारम्परिक जल संरक्षण, प्रबंधन और नियंत्रण के तरीके के लिए गांव स्तर के अध्ययन दलों का गठन किया जाए। तीसरे, पास के नदी-नाले के पानी को बरसात में रोकने हेतु बोरी बंधान या अन्य उपाय किए जाएं और चौथे, वर्षा जल को रोकने के लिए गांव के आसपास जल संचय व्यवस्था कायम की जाए। धरती पर पानी की कुल मात्रा लगभग १३,१०० लाख घन किलोमीटर है। इस पानी की लगभग ९७ प्रतिशत मात्रा समुद्र में खारे पानी के रूप में और लगभग तीन प्रतिशत मात्रा (३९० लाख घन किलोमीटर) साफ या स्वच्छ पानी के रूप में धरती पर अनेक रूपों में मौजूद है। इस साफ पानी का लगभग ७५ प्रतिशत हिस्सा धरती के ऊपर और लगभग २५ प्रतिशत हिस्सा धरती के नीचे विभिन्न गहराइयों में मिलता है। भारत की धरती पर पानी की मात्रा ४००० लाख हेक्टेयर मीटर आंकी गई है तथा भूजल भंडार की मात्रा ३९६ लाख हेक्टेयर मीटर है। इस सबके बावजूद जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व में लगभग तीन अरब लोग जल संकट की चपेट में हैं। नीति आयोग के अनुसार २०३० तक भारत के ४० प्रतिशत लोगों की पहुंच पीने के पानी तक नहीं होगी। देश में १५ वर्ष पहले १५ हजार नदियां और ७५ साल पहले ३० लाख कुएं, तालाब और झील थे जिनमें से ४५०० नदियां सूख गई और २० लाख कुएं, तालाब और झील गायब हो गए। पाताल में प्रतिवर्ष जा रहे १२० घन किलोमीटर भूगर्भीय जल के बदले प्रतिवर्ष लगभग १९० घन किलोमीटर जल निकाला जाता है। यानि वर्षा आदि से भूमि के अंदर जाने वाले और निकाले जाने वाले पानी में ७० घन किलोमीटर का अंतर रह जाता है। मध्यप्रदेश में हर साल भूजल करीब ४ इंच नीचे जा रहा है। पिछले १० साल में ४० इंच यानि सवा तीन फीट तक नीचे जा चुका है। यह इसलिए कि पानी क्षमता से ज्यादा निकाला जा रहा है, लेकिन रीचार्जिंग पर ध्यान नहीं है, जबकि प्रदेश की जमीन में ७५ लाख घन मीटर (एमसीएम) पानी को समाने की क्षमता है।

भारत की जलनीति में पानी के उपयोग की प्राथमिकताओं का उल्लेख तो है, परन्तु विभिन्न कामों में लाए जाने वाले पानी की सीमाओं का उल्लेख नहीं है। नतीजे में हर साल करीब ६० खरब लीटर पानी बिना उपयोग के बह जाता है। भूजल विशेषज्ञ जान शेरी (२०२० के स्टाकहोम वाटर प्राइज के विजेता) के शब्दों में भूजल पृथ्वी की रक्षा प्रणाली है। जाहिर है, ऐसे में प्रेति के प्रसाद की तरह मुफ्त मिलने वाला पानी बिकाऊ माल में तब्दील हो रहा है। पीने के पानी का कारोबार १.८० लाख करोड़ रुपए का हो गया है जो अगले कुछ सालों में ४.५ लाख करोड़ रुपए का हो जाएगा। बोतलबंद पानी में सर्वाधिक ४० प्रतिशत हिस्सेदारी अकेले बिसलेरी की है। जैसे-जैसे बोतलबंद पानी का बाजार बढ़ रहा है, कम्पनियां भूजल दोहन, भूमि उपयोग, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, कार्बन उत्सर्जन आदि को प्रभावित कर रही हैं।

ऐसा नहीं है कि हमारे पूर्वज पानी के मामले में लापरवाह थे। गोंडकाल में अधिकांश लोगों की आजीविका का आधार खेती और उससे जुड़ी सहायक गतिविधियां थीं, लेकिन गौंड राजाओं द्वारा बनाए गए अधिकांश तालाब नहर-विहीन थे। इसका मतलब है कि तालाबों का उपयोग आधुनिक तरीके से खेतों की सिंचाई के लिए नहीं, बल्कि मुख्यतरू नमी और भूजल स्तर बढ़ाने, जलवायु का संतुलन कायम रखने, पेयजल स्रोतों को भरोसेमंद बनाए रखने,आजीविका (मछली, सिंघाड ा, कमलगटटा और खेती) को स्थायित्व प्रदान करने के लिए होता था। मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर, जबलपुर, सागर और दमोह जिलों की गहरी काली मिट्टी में नमी संचित करने और इसी आधार पर रबी में बिना सिंचाई बढ़िया फसल लेने की देशज व्यवस्था प्रचलित थी।

कहते हैं कि पौराणिक राजा विराट ने मण्डला जिले के मवई इलाके में अधिकांश तालाब बनवाए थे। इस मामूली से कस्बे में १५० तालाबों का जिक्र तो अंग्रेजों के गजेटियर में भी मिलता है। बैगाओं की खास जीवन शैली, खेती- पाती और समाज व्यवस्था को देखते हुए अंग्रेजों ने १९ वीं शताब्दी में उन्हें एक खास इलाका बैगाचक बनाकर उसमें बसाया था। बैगा एक तरह से घुमंतू समाज के लोग रहे हैं इसलिए पानी का उनका साधन हर साल नदी-नालों के किनारे झिरिया खोदकर ही रहा है। इन झिरियों के किनारे ही बैगाओं की संसेंति, समाज फला-फूला है। भारतीय संविधान में पानी के मामले में केन्द्र और राज्य सरकारों के दायित्वों को रेखांकित किया गया है और अन्तराज्यीय नदियों के संचालन एवं विकास का उल्लेख किया गया है, परन्तु इस पूरी इबारत में समाज का कोई उल्लेख नहीं है। इसी तरह जलनीति में पानी के उपयोग का नियोजन और क्रियान्वयन की प्राथमिकताओं का जिक्र है पर इसमें से समाज गायब है।

परिवार नियोजन के लिए अलग नजरिये की जरूरत

तीन घटनाक्रमों ने संभवतः नसबंदी संख्या में लगातार वृद्धि में योगदान दिया है। पहला, हर गांव में आशा (एक्रिडिएटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट-मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) की उपस्थिति ने व्यवस्था को एक मानवीय चेहरा दिया है। इस उपस्थिति ने लोगों में विश्वास का निर्माण किया है तथा सरकार के व्यवस्था-संचालित निश्चय को गांव के अंतिम घर तक पहुंचाया है। परिवार नियोजन के लिए शुरू की गई सरकारी पहल मिशन परिवार विकास (एमपीवी) अब अपने सातवें वर्ष में है। इस मुहिम को मूल रूप से तीन से अधिक की कुल प्रजनन दर (टीएफआर) के साथ उच्च प्रजनन क्षमता क्षेत्रों के रूप में पहचाने गए १४६ जिलों में कुछ सफलता हासिल हुई है। चिन्हित जिले सात राज्यों- राजस्थान, असम, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखंड हैं। एमपीवी को उम्मीद है कि २०२५ तक इन उच्च फोकस क्षेत्रों में टीएफआर २.१ तक कम हो सकती है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए केंद्रित प्रयासों के परिणाम आंकड़ों में देखे जा सकते हैं लेकिन ये उन छिपी हुई समस्याओं के साथ आते हैं जिन्हें आंकड़े पकड़ नहीं पाते या नहीं पकड़ सकते हैं। उदाहरणार्थ, परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुंच बढ़ाने के सरकारी प्रयासों के बाद इन क्षेत्रों में गर्भ निरोधकों के उपयोग में तेजी आई है लेकिन गर्भ निरोधक का सबसे लोकप्रिय तरीका सर्जरी से जुड़े परिवार नियोजन की अपरिवर्तनीय विधि है। नतीजों के नजरिए से यह अच्छा है लेकिन महिलाओं के दृष्टिकोण से हमेशा अच्छा नहीं है। स्थायी विधि की लोकप्रियता राष्ट्रीय वरीयता को प्रतिबिंबित करती है जहां एनएफएचएस-५ के अनुसार वर्तमान में विवाहित महिलाओं के ३६.३ प्रतिशत ने इस विकल्प को अपनाया जिससे यह गर्भ निरोधक सभी विकल्पों में सबसे लोकप्रिय हो गया। एमपीवी जिलों वाले राज्यों में कई और महिलाओं ने स्थायी विधि का विकल्प चुना। चूंकि एमपीवी पिछड़ेपन के उच्च स्तर वाले जिलों में अनिवार्य रूप से चलती है, वह इन जिलों में कमजोर संचार तथा स्वास्थ्य देखभाल के खराब वितरण का संकेत देती है इसलिए महिला नसबंदी के नकारात्मक पक्ष यहां अधिक स्पष्ट होंगे। महिला नसबंदी जैसी स्थायी विधि आमतौर पर तब अपनाई जाती है जब दंपति के पास उतने बच्चे होते हैं जितने वे चाहते थे तथा अब और बच्चे पैदा न करने का विकल्प चुनते हैं। ग्रामीण भारत में बच्चों व युवा वयस्कों की मृत्यु असामान्य नहीं है। खासकर आदिवासी समुदायों में कई अप्रत्याशित घटनाओं के कारण-जैसे सर्पदंश, तेंदुए के हमले, पेड़ से गिरने, गांव के तालाब में डूबने और कई रोकथाम योग्य या उपचार योग्य बीमारियों का इलाज न होने के कारण मौतें होती हैं। समय पर देखभाल व उपचार न मिल पाने के कारण अक्सर बच्चों की मृत्यु हो जाती है। ऐसे मामले भी सामने आए हैं जहां दुर्घटनाओं के बाद दो या तीन बच्चों के बाद नसबंदी का विकल्प चुनने वाली महिलाएं खुद को अचानक कम बच्चों के साथ या बेटे के बिना पाती हैं। ऐसे मामलों में सर्जरी का उलटना असंभव नहीं है लेकिन बहुत मुश्किल है। इसके अलावा परिवार पर हुआ आघात का असर अंतहीन है। ग्रामीण भारत में महिला नसबंदी की बढ़ती स्वीकार्यता के ये दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हैं। वे गर्भ निरोध के अपरिवर्तनीय तरीकों की विशिष्ट भारतीय समस्याओं को भी उजागर करते हैं। खराब स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा भी सर्जरी के दौरान जटिल समस्याओं और यहां तक कि मौतों का कारण बनता है। एक बड़ा आघात यह भी होता है कि अगर सर्जरी से महिला बच जाती है तो वह अपने बच्चों को खो देती है और अब उसे और बच्चे नहीं हो सकते।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने मार्च २०१८ में लोकसभा में बताया था कि वर्ष २०१४-२०१७ में नसबंदी के बाद कुल ३५८ मौतें हुईं। मंत्री ने लोकसभा को बताया कि श्भारत सरकार द्वारा प्रकाशित नसबंदी सेवाओं में मानक और गुणवत्ता आश्वासन- २०१४ में निर्धारित मानदंड निर्धारित किए गए हैं और इन्हें नसबंदी प्रक्रियाएं करते समय सेवा प्रावधान में गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने के लिए सभी राज्यों और सेवा प्रदाताओं को उपलब्ध कराया गया है।

सिर्फ आंकड़ों के संदर्भ में देखें तो एनएफएचएस-३ से एनएफएचएस-५ की अवधि में ग्रामीण क्षेत्रों में महिला नसबंदी (वर्तमान में विवाहित महिलाओं के प्रतिशत के रूप में) राजस्थान में ३२.२ प्रश से बढ़कर ४४.५, बिहार में २२.६ से ३५.३, छत्तीसगढ़ में ३६.८ से ४७.६, झारखंड में १६.८ से ३७.४ और मध्य प्रदेश में ४६.९ से बढ़कर ५५.७ फीसदी हो गई है। हाल के तीन घटनाक्रमों ने संभवतः नसबंदी संख्या में लगातार वृद्धि में योगदान दिया है। पहला, हर गांव में आशा (एक्रिडिएटेड सोशल हेल्थ एक्टिविस्ट-मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) की उपस्थिति ने व्यवस्था को एक मानवीय चेहरा दिया है। इस उपस्थिति ने लोगों में विश्वास का निर्माण किया है।

गोरखपुर जिला अस्पताल का हाल

डाक्टर की कुर्सी पर बैठा था दलाल, टोका तो दी गाली-धमकी

गोरखपुर। डॉ. राजेश कुमार सिंह ने तहरीर में बताया कि प्रमोद सिंह हमेशा चार-पांच बाहरी लोगों को लेकर चिकित्सालय परिसर में घूमता है और मरीजों को फंसाकर दलाली करता है। उन्हें बेहतर सुविधा के देने का झांसा देकर धन उगाही भी करता है। पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।गोरखपुर जिला अस्पताल में दलालों को दी गई छूट का खामियाजा एक डाक्टर को ही भुगतना पड़ा। मुंह लगा यह दलाल आपरेशन रूम तक पहुंच गया और डाक्टर की कुर्सी पर जा बैठा। डाक्टर को यह बात बुरी लगी और बैठने का कारण पूछा तो वह उनसे उलझ गया। पहले टेबल पर रखे सामान को तितर-बितर कर दिया और फिर गालियां देने लगा। जाते-जाते धमकी भी दी।

आरोप है कि टेबल पर मौजूद पेपर को तितर-बितर करने के साथ ही धमकी देने लगा। अर्थों सर्जन डॉ. राजेश कुमार सिंह ने इसकी शिकायत मुख्य अधीक्षक से की और पुलिस में तहरीर दी। कोतवाली पुलिस ने प्रमोद सिंह को नामजद करते हुए उसके चार-पांच अज्ञात साथियों पर केस दर्ज कर किया है।

ये है पूरा मामला

जानकारी के मुताबिक, डॉ. राजेश कुमार सिंह ने तहरीर में बताया कि प्रमोद सिंह हमेशा चार-पांच बाहरी लोगों को लेकर चिकित्सालय परिसर में घूमता है और मरीजों को फंसाकर दलाली करता है। उन्हें बेहतर सुविधा के देने का झांसा देकर धन उगाही भी करता है।

सोमवार को वे अर्थों ओटी के चिकित्सक कमरे में बैठे थे, तभी वहां दलाल प्रमोद अपने साथियों के साथ आया और चिकित्सक की खाली कुर्सी पर बैठ गया। उन्होंने जब उससे काम पूछा तो बोला ऐसे ही बैठने आया हूं, डाक्टर ने कहा कि यह ओटी परिसर है यहां अनावश्यक प्रवेश वर्जित है। इतना सुनते ही प्रमोद ने डाक्टर की टेबल पर रखे सामान को तितर-बितर कर दिया और गालियां देने लगा। वहां मौजूद अन्य कर्मचारियों ने जब विरोध किया तो वह और उसके साथी कर्मचारियों को भी गाली देने लगे और दोबारा १०-२० लोगों के साथ आने की धमकी देते हुए सभी चले गए। पुलिस ने प्रमोद सिंह व अन्य पर सरकारी कार्य में बाधा सहित अन्य धारा में केस दर्ज किया है।

गोरखपुर में जालसाजी

मेहमान बनकर आया और शेयर का झांसा देकर 47 लाख ठग लिए

गोरखपुर। एक परिवार से दोस्ती कर ठग ४७ लाख रुपये की जालसाजी कर फरार हो गया। आरोप है कि ठग ने पहले आनलाइन एप की मदद से दोस्ती की और फिर घर में मेहमान बनकर रहा। रहने के बाद विश्वास में लेकर उसने शेयर में रुपये लगाकर मुनाफा कमाने का झांसा देकर जालसाजी की।

गोरखपुर के शाहपुर इलाके में रहने वाले एक परिवार से दोस्ती कर ठग ४७ लाख रुपये की जालसाजी कर फरार हो गया। आरोप है कि ठग ने पहले आनलाइन एप की मदद से दोस्ती की और फिर घर में मेहमान बनकर रहा। रहने के बाद विश्वास में लेकर उसने शेयर में रुपये लगाकर मुनाफा कमाने का झांसा देकर जालसाजी की। महिला की तहरीर पर शाहपुर पुलिस ने दिल्ली के २६९ए, डेरावाला नगर निवासी मनीष अग्गी के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।शाहपुर के गीता वाटिका के पास रहने वाली विनीता सिंह ने केस दर्ज कराया है। विनीता ने दी तहरीर में लिखा है कि बेटे से मनीष अग्गी अ नलाइन एप की मदद से दोस्ती करके बातचीत करता था। कुछ दिनों बाद मनीष अग्गी ने बेटे को फोन करके बताया कि वह दिल्ली से गोरखपुर आया है और मिलना चाहता है।

इसके बाद वह बेटे के साथ घर पर मेहमान बनकर आ गया। फिर परिवार के लोगों के साथ रहते हुए विश्वास में ले लिया। फिर उसने बताया कि उसका ट्रोन डाट क म नाम से एक एप है, इसमें शेयर में रुपया लगाया जाता है। महीने के अंत में मुनाफा मिल जाता है, जो बहुत ज्यादा होता है।

कई बार में २२ लाख रुपये खाते से ट्रांसफर कर दिया। फिर उसने २५ लाख रुपये नगद की मांग की। विश्वास में आकर दे दिया गया। पैसे मिलने के बाद आरोपी मनीष ने अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया। काफी प्रयास के बाद भी उससे संपर्क नहीं हो पाया। इसके बाद एक दिन उसका मोबाइल फोन अ न हो गया।

फोन पर बातचीत के दौरान उसने पैसा देने से इनकार कर दिया। गालियां देते हुए कहा कि कहीं शिकायत की तो पूरे परिवार की हत्या करा दूंगा। तब ठगी की जानकारी हुई। आईजी के आदेश पर शाहपुर पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। एसपी सिटी कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि तहरीर के आधार पर पुलिस केस दर्ज कर जांच कर रही है।

स्वस्थ पेशे की बीमार तस्वीर

मुफ्त इलाज, जांच-दवा में भी गरीबों का खून चूस रहे दलाल

गोरखपुर। १९ जुलाई को कमिश्नर ने सभी विभागों के साथ बैठक की थी, जिसमें जिला अस्पताल में पुलिस चौकी खोलने का फैसला लिया गया था। पुलिस अस्पताल प्रशासन से जगह मांग रही है। लेकिन, दो महीने का समय बीत गया, न तो जगह मिल पाई और न ही चौकी खुली। जिला अस्पताल और मेडिकल क लेज में गरीबों के मुफ्त इलाज और दी जाने वाली दवाओं में भी दलालों ने नेटवर्क खड़ा कर कमीशन तय कर लिया है। मरीजों को जल्दी जांच रिपोर्ट दिलाने और तत्काल इलाज का झांसा देकर दलाल बाहर के प्राइवेट एक्सरे सेंटर व पैथाल जी लेकर जाते हैं। हर मरीज पर कमीशन तय होता है। एक्स-रे पर १०० रुपये और पैथाल जी में ५०० रुपये की जांच में १५० रुपये का कमीशन है। अगर जांच पांच सौ रुपये से ऊपर की है तो फिर कमीशन भी उसी हिसाब से बढ़ जाता है। कुछ यही हाल अ परेशन में लगने वाले उपकरणों और दवाओं का भी है। सादी पर्ची पर दवा लिखी जाती है और जिला अस्पताल के सामने से किसी भी दुकान से लीजिए, कमीशन तय हो जाता है।

बीआरडी और जिला अस्पताल में ड क्टरों से ज्यादा हनक दलालों की है। जिला अस्पताल में तो ड क्टर की कुर्सी पर दलाल के बैठने और धमकाने की हरकत ने यह पूरी तरह साबित ही कर दिया है। उसी के बाद अमर उजाला की पड़ताल में धंधेबाजों का खेल सामने आया है।

मरीज बनकर जब दलाल से बात की गई तो पूरा खेल समझ में आ गया है। खास बात यह है कि धंधेबाजों ने इस खेल में कमीशन देने में पूरी ईमानदारी बरती। जिन अस्पताल, पैथाल जी या मेडिकल स्टोर की दुकान पर मरीजों को ले जाते हैं, वहां से शाम को दलाल कमीशन वसूलते हैं। फिर लस्सी की दुकान में पीछे बैठकर हर ड क्टर से जुड़े लोगों का हिसाब-किताब करके बड़ी ईमानदारी से कमीशन की रकम पहुंचा दी जाती है।

आश्चर्य तो इस बात का है कि इसे रोकने की जिम्मेदारी लिए बैठा स्वास्थ्य महकमा कार्रवाई तभी करता है, जब मामला तूल पकड़े या फिर कोई आकर उनके दफ्तर तक शिकायत करे। खुद से विभाग को इसकी फिक्र नहीं है, जिस वजह से न चाहते हुए भी मुफ्त की जांच, दवा और एक्स-रे के लिए लोगों को जेब ढीली करनी पड़ रही है।

बीआरडी मेडिकल कालेज में भी यही नेटवर्क काम कर रहा है। यहां पर एंबुलेंस, अस्पताल कर्मचारियों की सांठगांठ से मरीजों को ठगा जाता है। यहां पर मरीजों से दवा, जांच के नाम पर खेल तो होता ही है, सीधे मरीज प्राइवेट अस्पतालों को बेच दिए जाते हैं। मामला तब ही खुलकर सामने आता है, जब कोई फरियादी पुलिस तक पहुंच जाता है और फिर जांच के नाम पर पुलिस इसमें घुसती है। मरीज एंबुलेंस माफिया, खून माफिया सबका सच उजागर हो चुका है, लेकिन मेडिकल कालेज के जिम्मेदारों ने अब तक इसमें कोई कार्रवाई नहीं की है। पुलिस ने फौरी तौर पर जिसे पकड़ा, उसे जेल भेज दिया, लेकिन मरीजों को स्थाई राहत देने की जिम्मेदारी जिनके पास है, वह खामोशी साधे हुए हैं। यहां पर दलालों का लंबा नेटवर्क हैं। इसमें अस्पताल के कर्मचारी भी शामिल हैं। मरीज को बेहतर इलाज का झांसा देकर कर्मचारी ही प्राइवेट अस्पताल ले जाने की सेटिंग करते हैं। फिर एंबुलेंस की मदद से भेजा जाता है। इस समय पुलिस ने सख्ती की है तो थोड़ा छिप-छिपाकर काम कर रहे हैं

गोरखपुर विश्वविद्यालय: मिड टर्म की परीक्षा से अब छात्रों को मिलेगी निजात, तैयारी शुरू

गोरखपुर। गोविवि कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि मिड टर्म परीक्षा को लेकर छात्र एवं कालेज के प्राचार्यों ने मुलाकात कर समस्या से अवगत कराया था। मिड टर्म परीक्षाओं के कारण छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही थी। छात्र हित में मिड टर्म परीक्षाएं खत्म करने का निर्णय लिया गया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं उससे संबद्ध कालेजों के छात्रों के लिए राहत भरी खबर है। कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने छात्रों को मिड टर्म परीक्षा से राहत देने का निर्णय लिया है। अब मिड टर्म परीक्षा को इंड टर्म की परीक्षा के साथ कराने की योजना बनाई जा रही है। इससे विद्यार्थियों का बार-बार परीक्षा देने का तनाव तो कम होगा ही, उन्हें पढ़ाई के लिए भी डेढ़ से दो महीने का अतिरिक्त समय मिलेगा। गोविवि में सत्र २०२१-२२ में सीबीसीएस पैटर्न लागू किया गया था। तब से छात्रों को मिड टर्म परीक्षाएं भी देनी होती थीं। मिड टर्म परीक्षाएं प्रायः अक्तूबर में होती थीं। इधर स्नातक और परास्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश भी परीक्षा के एक हफ्ते पहले तक लिया जाता था। यानी प्रवेश लेने के एक हफ्ते में सैकड़ों विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के बारे में समझ भी नहीं पाते थे, तभी उन्हें परीक्षा में बैठना पड़ता था। इसे लेकर विद्यार्थियों से लेकर कालेजों तक में रोष था। पहले ही सत्र से मिड टर्म परीक्षाओं का घोर विरोध किया जा रहा था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। छात्र और कालेज के प्राचार्यों ने कुलपति से मुलाकात कर मिड टर्म से निजात दिलाने की मांग की।

30 सितंबर से प्रस्तावित थी परीक्षा

वर्तमान सत्र में ३० सितंबर से मिड टर्म परीक्षाएं प्रस्तावित थीं। जबकि अभी विवि से लेकर कालेजों तक में प्रवेश प्रक्रिया चल रही है। कुलपति प्रो. पूनम टंडन से शिकायत की गई तो उन्होंने पुराने फैसले को पलटते हुए मिड टर्म परीक्षा खत्म करने का निर्णय लिया है।

चार महीने चलती थीं परीक्षाएं

मिड टर्म और इंड टर्म परीक्षाओं के कारण एक सत्र में चार महीने सिर्फ परीक्षाएं ही चलती थीं। छात्रों की शिकायत थी कि उनका कोर्स पूरा ही नहीं हो पाता था। वे तनाव में थे। प्रथम वर्ष में दाखिला लेने वाले छात्रों को तो १०० दिन भी क्लास नसीब नहीं हो पा रही थी(गोविवि कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने कहा कि मिड टर्म परीक्षा को लेकर छात्र एवं क लेज के प्राचार्यों ने मुलाकात कर समस्या से अवगत कराया था। मिड टर्म परीक्षाओं के कारण छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही थी। छात्र हित में मिड टर्म परीक्षाएं खत्म करने का निर्णय लिया गया है। इससे परीक्षा को लेकर छात्रों का तनाव भी कम होगा। इसका आदेश जल्द जारी हो जाएगा।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे–घर में सोया था चोर, मालिक पहुंचा तो पूछा तुम कौन ? खुद को शिक्षक तो कभी बताता लेबर

कानपुर। बुधवार देर रात तीन चोर एक घर का ताला तोड़कर अंदर घुसे। दो चोर करीब डेढ़ लाख के गहने, नकदी लेकर फरार हो गए, लेकिन तीसरा चोर दयालपुरम निवासी दीपक शुक्ला अधिक नशे में होने के कारण घर में ही निर्वस्त्र होकर सो गया। इसे कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। हुआ कुछ यूं... नौबस्ता के कृष्णविहार के बंद घर में बुधवार रात को तीन चोर घुसे। दो चोर तो सामान लेकर निकल गए। तीसरा ज्यादा नशे में होने के कारण वहीं सो गया। सुबह मकान मालिक पहुंचे और उसे घर में सोता देख उठाया। चोर उन्हीं से भिड़ गया। मालिक से ही सवाल दागा कि तुम कौन? मेरे घर में कैसे घुस आए? चोर के ये सवाल सुनकर मालिक ने उसे दो थप्पड़ जड़े तो उसका नशा उतरा। इसके बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर उसे व उसके एक और साथी को पकड़कर जेल भेज दिया।

गल्ले का व्यापार करने वाले इंद्रकुमार तिवारी की शिक्षामित्र पत्नी मनीषा को मुंह का कैंसर था। सोमवार को उनका देहांत हो गया। शव का अंतिम संस्कार करने के बाद इंद्रकुमार

दो बेटियों सोनी, मोनी के साथ घर पर ताला डालकर पैतृक गांव पतारा तिलसड़ा चले गए थे। बुधवार देर रात तीन चोर उनके घर का ताला तोड़कर अंदर घुसे। दो चोर करीब डेढ़ लाख के गहने, नकदी लेकर फरार हो गए, लेकिन तीसरा चोर दयालपुरम निवासी दीपक शुक्ला अधिक नशे में होने के कारण घर में ही निर्वस्त्र होकर सो गया। पड़ोस में रहने वाले कमलेश कुमार ने बताया कि सुबह करीब ५रू३० बजे देखा कि इंद्रकुमार के घर के बाहर ताला नहीं लगा था।

सोचा कि देर रात परिवार गांव से लौट आया होगा। सुबह करीब नौ बजे पीछे वाली गली में रहने वार्ली इंद्रकुमार की साली निशा का बेटा रामजी पौधों को पानी देने पहुंचा तो ताला खुला देखा। अंदर से बंद गेट न खुलने पर वह कमलेश के घर से फांदकर अंदर पहुंचा तो किचन में चोर सोता मिला। निशा तिवारी के अनुसार रामजी ने जब उसे जगाया तो वह रामजी से बोला तुम घर में कैसे घुस आए। मेरी बेटी प्रीति, बेटा विपिन कहां हैं।

कुछ देर बाद नींद उचटने पर अपने भाई अखिलेश को फोन कर बुलाने की मिन्नतें करने लगा। इस बीच लोगों ने पुलिस को फोन कर दिया, जो उसे अपने साथ पुलिस चौकी ले गए। चोरी की रिपोर्ट दर्ज करने के बाद पुलिस ने पूछताछ के बाद दूसरे चोर हनुमंत विहार निवासी उत्कर्ष उर्फ सोनू पांडेय को भी गिरफ्तार कर लिया। तीसरे चोर सुनीत तिवारी की तलाश की जा रही है। नौबस्ता थाना प्रभारी के अनुसार तीनों नशेबाज हैं। दीपक के अधिक नशे में होने के कारण दोनों उसे वहीं छोड़कर चले गए थे।

भाई बोला... मेरा कोई लेनादेना नहीं, जेल भेज दो

निशा तिवारी के अनुसार चोर के कहने पर उसके भाई अखिलेश को फोन कराया तो उसने बताया कि वह कभी पुताई तो कभी मजदूरी करके घूमता रहता है। पूर्व में भी कई बार चोरी करते पकड़ा जा चुका है। वह कई बार पुलिस की मिन्नतें करके उसे छुड़वा चुका है। अब नहीं छुड़वाएगा। जेल भेज दो, बोलकर फोन काट दिया।

पहले किया शांतिभंग में चालान, मिली फटकार तो भेजा जेल

घर से पकड़े गए चोर का हंसपुरम चौकी इंचार्ज प्रदीप कुमार ने पहले शांतिभंग में चालान कर दिया। इसके बाद निजी मुचलके पर छोड़ दिया। मीडिया में मामला आया तो नौबस्ता थाना प्रभारी जगदीश पांडेय ने चौकी इंचार्ज को फटकार लगाई तब दीपक को दोबारा गिरफ्तार किया। हालांकि, थाना प्रभारी चालान की बात से बाद में मुकर गए।

चोर खुद को कभी बताता शिक्षक तो कभी बताता मजदूर

गल्ला व्यापारी के घर में सोते हुए पकड़ा गया चोर पुलिस को घंटों गुमराह करता रहा। वो कभी खुद को गणित का शिक्षक बताता तो कभी मजदूर और कभी पेंटर बताता रहा। पुलिस के अनुसार चोरी के आरोपी दीपक ने अपने तीसरे साथी का नाम गलत बताया था। उसके संबंध में जानकारी की जा रही है। तीसरे चोर का नाम उसने सुनील तिवारी बताया था, जो पुलिस की जांच में एक पूजा पाठ करने वाला पंडित निकला। पुलिस अब दूसरे चोर से पूछताछ कर माल बरामद करने का प्रयास कर रही है।

पेशी पर आए बंदी ने कोर्ट परिसर में ब्लेड से काटा खुद का गला, बोला– फर्जी मामले में पुलिस ने पकड़ा

आजमगढ़। आजमगढ़ जिला कारागार से पेशी पर आए एक बंदी ने कोर्ट परिसर में ब्लेड से खुद के गले पर वार कर लिया। घटना से कोर्ट परिसर में हड़कंप मच गया। लहूलुहान हालत में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आजमगढ़ जिला कारागार से पेशी पर आए एक बंदी ने कोर्ट परिसर में ब्लेड से खुद के गले पर वार कर लिया। घटना से कोर्ट परिसर में हड़कंप मच गया। लहूलुहान हालत में उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। लखनऊ जिले के ठाकुरगंज थाना अंतर्गत हबीबपुर कला पहाड़ निवासी नईम अंसारी (३०) को जीयनपुर कोतवाली पुलिस ने २७ अगस्त को प क्सो एक्ट में लखनऊ से ही गिरफ्तार किया था। आजमगढ़ लाकर उसे न्यायालय में पेश किया गया। जहां से उसे जेल भेज दिया गया। शुक्रवार को वह जेल से न्यायालय पेशी पर लाया गया था। इसी दौरान न्यायालय ल कअप में न जाने कहां से वह ब्लेड पा गया और अपने गर्दन पर वार कर लिया। बंदी के लहूलुहान होते ही मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों में हड़कंप मच गया। आनन-फानन पुलिसकर्मी उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। उपचार के बाद नईम ने बताया कि उसे जीयनपुर कोतवाली पुलिस ने फर्जी मामले में गिरफ्तार किया है। जिसके चलते ही उसने इस घटना को अंजाम दिया है। आजमगढ़ एसपी अनुराग आर्य ने कहा कि प क्सो एक्ट में गिरफ्तार एक बंदी ने पेशी पर आने के दौरान न्यायालय परिसर में ब्लेड से खुद के गर्दन पर वार किया। उसके गदर्न पर हल्की चोट आई है। जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मुख्यमंत्री योगी ने शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा को किया याद

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा को श्रद्धांजलि दी और कारगिल युद्ध में किए गए उनके योगदान को याद किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा को याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा माँ भारती की रक्षा के लिए कारगिल युद्ध में अंतिम सांस तक दुश्मनों से लड़ते रहे। उन्होंने देश की संप्रभुता-अखंडता की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया, जो आज भी देशभक्ति की एक महान मिसाल है। उनकी जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन विक्रम बत्रा माँ भारती की रक्षा के लिए कारगिल युद्ध में अंतिम सांस तक दुश्मनों से लड़ते रहे। उन्होंने देश की संप्रभुता-अखंडता की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया, जो आज भी देशभक्ति की एक महान मिसाल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उन्हें याद किया और ट्वीट किया कि कैप्टन विक्रम बत्रा अमर रहे... जय हिंद। भारत माता की जय।

चूहे से फैलती है बीमारी–कोरोना से भी खतरनाक लेप्टोस्पायरोसिस, वाराणसी में 10 से अधिक बच्चे पीड़ित, अलर्ट जारी

वाराणसी। बीएचयू के जीवविज्ञानी प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे ने बताया कि लेप्टोस्पायरोसिस बैक्टीरिया कोरोना वायरस से भी ज्यादा खतरनाक है। कोरोना की चपेट में आने वालों की मृत्यु दर से एक से डेढ़ फीसदी है, जबकि लेप्टोस्पायरोसिस की तीन से १० फीसदी है। इस बीमारी के वाहक चूहे हैं। कोरोना से भी खतरनाक लेप्टोस्पायरोसिस ने वाराणसी में दस्तक दी है। यह बीमारी चूहों से होती है। बच्चों को ही निशाना बनाती है। अब तक १० से अधिक बच्चे चपेट में आ चुके हैं। शहर के निजी अस्पतालों में इलाज चल रहा है। मामले की गंभीरता को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने अलर्ट जारी किया है।

तेज बुखार के कारण चेतगंज की बालिका को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। ड क्टरों ने जांच कराई, लेकिन बीमारी पकड़ में नहीं आई। इसके बाद सी रिएक्टिव प्रोटीन (सीआरपी) जांच कराई गई। सीआरपी ज्यादा मिली तो डाक्टर चिंतित दिखे। आशंका के आधार पर लेप्टोस्पायरोसिस की जांच कराई तो रिपोर्ट प जिटिव आई। सीएमओ डा . संदीप चौधरी ने बताया कि लेप्टोस्पायरोसिस के बारे में जानकारी मिली है। बाल रोग विशेषज्ञों को अलर्ट किया गया है। इससे पहले २०१३ में मामले सामने आए थे। मंडलीय अस्पताल के बालरोग विशेषज्ञ ड . सीपी गुप्ता ने बताया कि ओपीडी में मरीज आ रहे हैं।

तीन चार दिन से ज्यादा है बुखार तो ना लें हल्के में

भारतीय बाल अकादमी के अध्यक्ष ड . आलोक भारद्वाज के मुताबिक, बुखार अगर तीन-चार दिन से ज्यादा है तो इसे हल्के में न लें। सीआरपी की जांच कराइए। अगर सीआरपी ज्यादा आए तो समझ लें बैक्टीरियल बुखार है। इसके बाद लेप्टोस्पायरोसिस की जांच करानी होगी। इसके लक्षण डेंगू और वायरल से मिलते हैं। इसमें प्लेटलेट्स तेजी से नहीं डाउन होता है। ३० से ४० हजार तक पहुंचने के बाद रिकवर हो जाता है।

चूहे के मूत्र के जरिये फैल रही बीमारी

नवजात शिशु संघ के प्रदेश अध्यक्ष और बाल रोग विशेषज्ञ ड . अशोक राय के मुताबिक अब तक बाल लेप्टोस्पायरोसिस पीड़ित पांच बच्चों का इलाज कर चुके हैं। यह बीमारी चूहे के मूत्र के जरिये बच्चों में फैल रही है। इसमें डेंगू की तरह ही बुखार आएगा। यह शरीर के सभी अंगों को प्रभावित करता है। पहले सामान्य बुखार होता है। लक्षण पांच से छह दिन बाद मिलते हैं। सही इलाज न मिले तो बुखार १० से १५ दिन रहता है। इससे कभी पीलिया तो कभी हार्ट फेल होने का खतरा रहता है।

कोरोना से ज्यादा खतरनाक है बैक्टीरिया

बीएचयू के जीवविज्ञानी प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे ने बताया कि लेप्टोस्पायरोसिस बैक्टीरिया कोरोना वायरस से भी ज्यादा खतरनाक है। कोरोना की चपेट में आने वालों की मृत्यु दर से एक से डेढ़ फीसदी है, जबकि लेप्टोस्पायरोसिस की तीन से १० फीसदी है। इस बीमारी के वाहक चूहे हैं। चूहे ने कहीं पेशाब किया और आपकी स्किन कटी है तो अगर आप इसके संपर्क में आते हैं तो लेप्टोस्पायरोसिस होने की आशंका रहती है। यह बैक्टीरिया छह महीने तक पानी में जीवित रह सकता है। जुलाई से अक्तूबर के बीच बैक्टीरियल इंफेक्शन ज्यादा होता है।

1980 में सबसे पहले चेन्नई में मिला था बैक्टीरिया

प्रो. चौबे ने बताया कि १९८० में सबसे पहले इस बैक्टीरिया की पहचान चेन्नई की गई थी। उत्तर प्रदेश में पहला मरीज २००४ में मिला था। ४३ वर्षों में बैक्टीरिया ने अपना स्वरूप बदल लिया है। पहले जहां यह ४० से ४५ आयु वर्ग को प्रभावित कर रहा था। इस बार के संक्रमण में बच्चे इसकी जद में सबसे ज्यादा है।

लेप्टोस्पायरोसिस संक्रमण के लक्षण

बुखार, शरीर, पीठ और पैरों में तेज दर्द, आंख में लाली, पेट में दर्द, खांसी, खांसी के साथ खून आना, सर्दी के साथ बुखार आना और शरीर में लाल चकत्ते। बुखार १०४ डिग्री से अधिक हो सकता है।

लेप्टोस्पायरोसिस बचने के लिए बरतें ये सावधानी

- जिस तालाब में जानवर जाते हैं, वहां नहाने से बचें
- चूहे घर में हैं तो सावधानी बरतें
- बाहर से लाए गए प्लास्टिक के पैकेट को साफ करके इस्तेमाल करें
- मानसून के दौरान स्विमिंग, वाटर स्कीइंग, सेलिंग से बचें
- घर के पालतू जानवरों की साफ-सफाई पर भी जरूर ध्यान दें।

बच्चों के विवाद में भिड़े दो पक्ष

पुलिस पहुंची...तो एक होकर बोल दिया हमल, 16 पर रिपोर्ट दर्ज

कन्नौज। पुलिस ने मोहम्मद हारून को रिजवान की दोनाली बंदूक के साथ गिरफ्तार करने का मुकदमा दर्ज किया है। बंदूक मालिक रिजवान के खिलाफ भी लाइसेंसी असलहा दूसरे को देने का मुकदमा दर्ज किया है। कन्नौज जिले में समधन के मोहल्ला गोरी नवादा में बच्चों में हुए विवाद के बाद बड़े भी भिड़ गए। दोनों पक्षों से जमकर पथराव और फायरिंग हुई। सूचना पाकर पहुंची पुलिस को देखते ही दोनों पक्ष एक हो गए और पुलिस टीम पर ही हमला बोल दिया। पथराव के साथ फायरिंग करने का भी आरोप है।

पुलिस ने बल प्रयोग कर तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इनमें से एक के पास से दोनाली बंदूक बरामद की है। पुलिस ने १६ नामजद और छह अज्ञात के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। मामला गुरसहायगंज कोतवाली क्षेत्र के कस्बे समधन के मोहल्ला गोरी नवादा का है।

जानकारी के मुताबिक बुधवार देर रात हारून और शमशाद के बच्चों के बीच विवाद हो गया था। इसकी सूचना परिजनों को हुई तो वे भी भिड़ गए। दोनों पक्षों में जमकर गालीगलौज हुई। उसके बाद पत्थर भी चले। एक-दूसरे पर लाठी-डंडे बरसाए गए। फायरिंग का भी आरोप लगा।

पुलिस ने लोगों को रोकने का प्रयास किया

घटना की सूचना पर यूपी ११२ पुलिस को दी गई। सूचना मिलने पर कस्बा चौकी प्रभारी अजब सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। दरोगा मोहम्मद तौकीर, आरक्षी आदेश कुमार और बिहारी भी मौके पर पहुंच गए। बताया जा रहा है कि पुलिस ने झगड़ा कर रहे लोगों को रोकने का प्रयास किया।

मोहम्मद हारून को बंदूक सहित गिरफ्तार किया

इस पर दोनों पक्ष एक हो गए और पुलिस टीम पर हमला बोल दिया इसके बाद अवैध और लाइसेंसी हथियारों से फायरिंग शुरू कर दी। सूचना पाकर बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंच गया और फायरिंग कर रहे मोहम्मद हारून को दोनाली बंदूक सहित गिरफ्तार कर लिया। शमशाद और ताहिर हसन भी पुलिस के हत्थे चढ़ गए।

आपस में रिश्तेदार हैं दोनों पक्ष

घटना के दौरान हुई फायरिंग और पथराव से लोगों में दहशत फैल गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया। कोतवाल जयप्रकाश शर्मा ने बताया कि जिन दो पक्षों में विवाद हुआ, वह आपस में रिश्तेदार हैं। एक के पास से बंदूक बरामद करके तीन को गिरफ्तार किया गया है। बाकी की तलाश की जा रही है।

पुलिस ने दर्ज की संगीन धाराओं में रिपोर्ट

मामले में दरोगा मोहम्मद तौकीर ने हारून, शमशाद, ताहिर हसन, फहीम, हसरून, कलीम, सलमान, शराफत, मुख्तार, मीना, इरशाद, सलमान, निजाम, मुजीद, नकिम और छोटी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। इन सभी के खिलाफ सरकारी कार्य में बाधा डालने, पथराव करने, हत्या के प्रयास सहित कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है।

लाइसेंस किसी के नाम, बंदूक चला रहा था दूसरा

पुलिस ने मोहम्मद हारून को रिजवान की दोनाली बंदूक के साथ गिरफ्तार करने का मुकदमा दर्ज किया है। बंदूक मालिक रिजवान के खिलाफ भी लाइसेंसी असलहा दूसरे को देने का मुकदमा दर्ज किया है।

बेटे के लिए मांगने गई थी लंबी उम्र का आशीर्वाद, सड़क हादसे में चली गई जान

आगरा। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर बेटे की लंबी उम्र के लिए आशीर्वाद मांगने जा रही महिला के साथ दर्दनाक हादसा हो गया। मंदिर के पास ही सड़क पार करते समय ट्रक ने महिला को रौंद दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में एक विवाहिता की मौत ऐसे होगी किसी ने सोचा भी नहीं था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विवाहिता अपने पांच साल के बेटे का जन्मदिन मंदिर में मनाकर उसकी लंबी आयु का आशीर्वाद मांगने के लिए जा रही थी, लेकिन दर्दनाक हादसे में उसकी मौत हो गई। विवाहिता की मौत से परिवार के लोगों में चीख पुकार मच गई। पूरे परिवार की खुशियां कुछ ही पलों में उजड़ गईं।

थाना मलपुरा के रहने वाले रोहित उपाध्याय के पांच साल के बेटे कृष्णा का ७ सितंबर को जन्मदिन था। रोहित और उसकी पत्नी बृजेश ने बेटे का जन्मदिन जन्माष्टमी पर पड़ने की वजह से मंदिर पर मनाने का निर्णय लिया था। रोहित ने बताया कि पत्नी बेहद खुश थी। उसने बताया कि मंदिर में भगवान के चरणों में बेटे का जन्मदिन मनाएंगे, जिससे उसे दीर्घआयु का आशीर्वाद मिल सके। घर के सभी सदस्य बेटे की जन्मदिन की तैयारियां करने में जुटे हुए थे। शाम को पत्नी घर से मंदिर के लिए निकली। वो जगनेर रोड को पार कर रही थी, उसी दौरान विपरीत दिशा से आ रहे ट्रक ने रौंद दिया। टक्कर इतनी तेज लगी कि महिला कई मीटर तक ट्रक में उलझकर घिसटती चली गई।

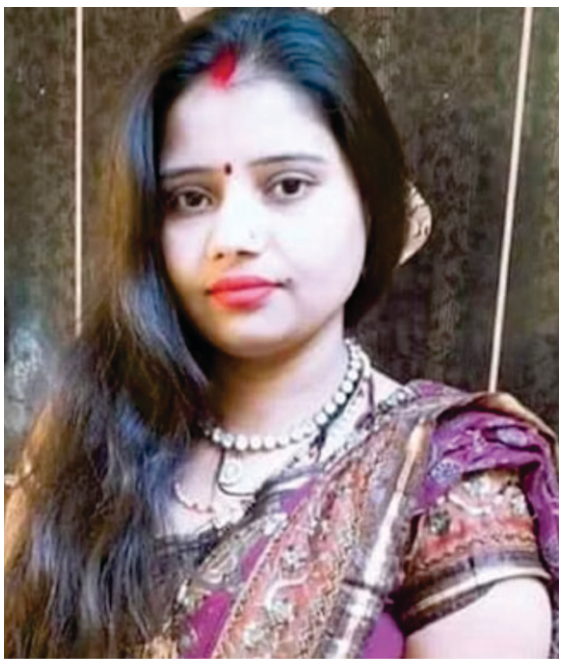

हादसे को देख कांप गए लोग

ट्रक ने जिस तरह महिला को रौंदा उसे देख लोग भी कांप गए। महिला की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही परिवार के सदस्य मौके पर आ गए। महिला के शव को देख परिवार के लोगों में चीख पुकार मच गई। सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने महिला के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

लापरवाही से दौड़ाया ट्रक

वहीं रोहित ने बताया कि चालक ने ट्रक को लापरवाही से दौड़ते हुए उसकी पत्नी की जान ले ली है। बताया गया है कि रोहित और बृजेश की शादी २०११ में हुई थी। उनके दो बच्चे हैं। एक का नाम शानू है, जिसकी उम्र १० साल है और छोटा बेटा कृष्णा ५ साल का है।

पंद्रह करोड़ से दिबियापुर में बनेंगी तीन पानी की टंकियां

दिबियापुर। अमृत- योजना के तहत दिबियापुर में अगले दो वर्षों में २४ घंटे पेयजल आपूर्ति मिलनी शुरू हो जाएगी। इसके लिए लगभग साढ़े १५ करोड़ लागत से दिबियापुर में २३०० किलोलीटर क्षमता की तीन पानी की टंकियों के निर्माण के लिए धरातल पर काम शुरू हो गया है। कांशीराम कालोनी में बनने वाली पानी की टंकी के लिए जल निगम (नगरीय) ने बोरवेल का काम पूरा कर लिया है। नगर में लगभग ५० किलोमीटर नई पाइप लाइन बिछाने का प्रस्ताव भी है।

दिबियापुर नगर पंचायत को तीन जोनों में बांटकर पानी की टंकी बनाए जाने की प्रक्रिया शुरू की गई है। तीन जोन में अलग अलग तीन पानी की टंकियां बनाई जानी है। शासन का लक्ष्य है कि दिबियापुर नगर पंचायत क्षेत्र में वर्ष २०५० में होने वाली आबादी के हिसाब से पानी की टंकियों का निर्माण कराया जाए। ताकि लोगों को भरपूर और २४ घंटे पानी मिल सके। जल निगम के अधिकारियों के अनुसार नगर पंचायत एवं राजस्व विभाग के साथ हुए सर्वे के बाद तीन स्थानों पर पानी की टंकी बनाए जाने के लिए जगह चिन्हित कर ली गई है। भगवतीगंज में कांशीराम कालोनी आवासीय परिसर में ११०० किलोलीटर, रोडवेज बस स्टैंड के पास सात सौ किलोलीटर एवं उमरी ग्राम पंचायत में प्रस्तावित जमीन पर पांच सौ किलोलीटर की पानी की टंकी बनना प्रस्तावित है। कांशीराम कालोनी आवासीय परिसर में प्रस्तावित पानी की टंकी के लिए बोरवैल तैयार कर लिया गया है। जबकि रोडवेज बस अड्डा के पास चिन्हित भूमि पर पानी भर जाने के कारण बोरवेल फेल हो गया। इसके चलते जमीन में डाले गए पाइप लाइन बाहर निकाल दिए गए। अब यहां पानी सूखने का इंतजार है। जबकि उमरी में चिन्हित जमीन पर पानी भर जाने के कारण अभी बोरवेल निर्माण का काम शुरू नहीं हो सका है। यहां पानी सूखने में लगभग छह महीने लगने की उम्मीद है।

39 वर्ष पुरानी पानी की टंकी से हो रही पेयजल आपूर्ति

नगर पंचायत दिबियापुर के १५ वार्डों में रहने वाली लगभग हजार की आबादी को गर्मियों में मांग के सापेक्ष लगभग २३ फीसदी पानी ही मिल पाता है। यहां लगभग ३६ वर्ष पहले वर्ष १९८४ में पेयजलापूर्ति के लिए बनाई गई ६५० किलोलीटर क्षमता वाली पानी की टंकी और जर्जर पाइप लाइन से लोगों को पेयजल मिल रहा है। पुरानी पाइप लाइनें होने के कारण लीकेज की समस्या रहती है और घरों तक गंदा पानी भी पहुंचता है। जानकारों की मानें दिबियापुर की जनसंख्या के हिसाब से प्रतिदिन पानी की मांग २.९२० मिलियन लीटर पर डे (एलएमडी) है। माना जा रहा है कि वर्ष द्र द्र तक दिबियापुर की जनसंख्या बढ़कर लगभग हजार हो जाएगी।

मई माह में दिबियापुर में तीन पानी की टंकी के निर्माण के लिए टेंडरिंग प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। लगभग २० माह में काम पूरा होना प्रस्तावित है। पानी की टंकियों एवं पाइप लाइन बिछाने के बाद मेंटीनेंस पीरियड में २४ घंटे पेयजलापूर्ति की जाएगी। बाद में नगर पंचायत को हैंडओवर की जाएगी। सात जगह बोरवेल बनने हैं, बोरवेल के लिए तीन स्थान मिल चुके हैं। तेजी से काम कराया जाएगा। - अजय कुमार सिंह, अवर अभियंता, जल निगम (नगरीय) पानी की टंकी बनाने के लिए विवेकानंद महाविद्यालय से गांव उमरी मार्ग किनारे भूमि चिन्हित की गई है। नगर पंचायत दिबियापुर से इसके हस्तांतरण के लिए पत्र मिला है। उमरी में भू प्रबंध समिति की बैठक में प्रस्ताव के पश्चात पानी की टंकी बनाने के लिए भूमि हस्तांतरित की जा सकेगी।- जयप्रताप सिंह, लेखपाल

छोटे भाई ने की बड़े भाई की हत्या

उजाड़ दिया परिवार- बीएसएफ के जवान ने किया था भाई का मर्डर, पत्नी को खिलाया जहर

मेरठ। जवान ने संपत्ति के विवाद में अपने भाई की गोली मारकर हत्या कर दी। उसकी पत्नी को भी जहर खिला दिया। पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है। मेरठ के बहसूमा में हुई विपिन की हत्या संपत्ति के विवाद हुई है। पुलिस जांच में पता चला कि उसके भाई ने ही संपत्ति के विवाद में हत्या की है। इतना ही नहीं हत्यारोपी भाई ने उसकी पत्नी को भी जहरीला पदार्थ खिला दिया।

गोली मारकर की हत्या

बहसूमा थाना क्षेत्र के गांव अकबरपुर सादात में विपिन भाटी (४०) की संपत्ति के विवाद में भाई ने गोली मारकर हत्या की। उसकी पत्नी सुंदरी को भी जहरीला पदार्थ खिला दिया गया। विपिन के साले ने विपिन के भाई अरविंद, भाभी पिंकी व मां किरणवती और पिता ऋषिपाल के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराई है। अकबरपुर सादात निवासी ऋषिपाल के तीन पुत्र विपिन, प्रवीण व अरविंद थे। मझले बेटे प्रवीण की बीमारी के चलते पांच वर्ष पूर्व मौत हो गई थी। प्रवीण व विपिन की पत्नी दोनों सगी बहनें हैं। प्रवीण की पुत्री शिवानी, स्वाति व एक पुत्र शिवम है। विपिन की कोई संतान नहीं है। वह बड़े भाई प्रवीण के बच्चों की परवरिश कर रहा था। छोटा भाई अरविंद बीएसएफ में है। कई दिनों से दोनों भाइयों में संपत्ति के बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा था।

वहीं, शुक्रवार सुबह करीब नौ बजे लोगों को विपिन के घेर से फायरिंग की आवाज सुनाई दी। यहां खून से लथपथ विपिन बरामदे में मिला। उसकी पत्नी सुंदरी की भी हालत बिगड़ गई। बताया गया कि उसे जहरीला पदार्थ खिलाया गया। ग्रामीणों ने आनन-फानन दंपती को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां विपिन को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सुंदरी की हालत नाजुक बनी हुई है।

विपिन के साले रवि ने हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराई है। मां किरणवती को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। बाकी तीनों आरोपी फरार हैं। एसपी देहात कमलेश बहादुर का कहना है कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। पुलिस जांच कर रही है।

नटराज मूर्ति से कोणार्क चक्र तक...

भारत ने ऐसे दिखाई दुनिया को अपनी साफ्ट पावर की झलक

नई दिल्ली। १३वीं सदी में राजा नरसिंहदेव-प्रथम के शासनकाल में कोणार्क चक्र को बनाया गया था। भारत के राष्ट्रीय ध्वज में भी इसका इस्तेमाल किया गया है। जी२० शिखर सम्मेलन का आज पहला दिन है। दुनिया के शीर्ष नेता दिल्ली में मौजूद हैं, जिनका पीएम मोदी ने भारत मंडपम में स्वागत किया। इस आयोजन के जरिए भारत दुनिया में अपनी साफ्ट पावर बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। इसकी झलक उस वक्त दिखाई दी, जब पीएम मोदी ने कोणार्क चक्र की प्रतिति के सामने खड़े होकर विदेशी मेहमानों का स्वागत किया। वहां भारत की पुरातन संस्कृति के साथ ही आधुनिकता का बेहतरीन संगम देखने को मिला।

भारत मंडपम में दिखी सांस्कृतिक ताकत

जी२० सम्मेलन के लिए भारत मंडपम को भारतीयता के रंग में रंगा गया है। भारत मंडपम में कोणार्क चक्र के साथ ही नटराज की प्रतिमा और विभिन्न योग कलाओं को दर्शाया गया है। स्वागत के दौरान पीएम मोदी विदेशी मेहमानों को कोणार्क चक्र की महत्ता के बारे में बताते भी दिखे। कोणार्क चक्र लगातार बढ़ते समय की गति, प्रगति और निरंतर परिवर्तन का प्रतीक है। १३वीं सदी में राजा नरसिंहदेव-प्रथम के शासनकाल में कोणार्क चक्र को बनाया गया था। भारत के राष्ट्रीय ध्वज में भी इसका इस्तेमाल किया गया है। यह कोणार्क चक्र भारत के प्राचीन ज्ञान, उन्नत सभ्यता और स्थापत्य उत्कृष्टता को दर्शाता है।

नटराज प्रतिमा और योग के साथ हुआ मेहमानों का स्वागत

भारत मंडपम के प्रवेश द्वार पर २८ फुट ऊंची नटराज की प्रतिमा स्थापित की गई है। यह प्रतिमा भगवान शिव की सृजन और विनाश की शक्ति का प्रतीक है। अष्टधातु की इस प्रतिमा को पारंपरिक चोल शिल्प का उपयोग कर बनाया गया है। साथ ही भारत मंडपम में दुनिया को भारत की देन योग की विभिन्न मुद्राएं दर्शाती प्रतिमाएं लगी हुई हैं, जो भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और वैज्ञानिक इतिहास का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। साथ ही भारत मंडपम के डिजाइन में भी भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है।

आधुनिकता का भी रखा गया है पूरा ख्याल

भारत मंडपम में आधुनिकता का भी पूरा ख्याल रखा गया है। परिसर में एक लाख वर्ग मीटर का एक प्रदर्शनी क्षेत्र है तो दो लाख वर्ग मीटर का सम्मेलन क्षेत्र। इसमें एक साथ ३ हजार लोगों के बैठने की क्षमता वाला अ डिटोरियम है तो ५०० लोगों के लिए एक सेमिनार ह ल समेत कई खासियतें हैं। यह सिडनी के अ पेरा हाउस से भी बड़ा है। भारत मंडपम में सभी आधुनिक सुविधाओं का ख्याल रखा गया है।

मुसलमानों में बढ़ रही भाजपा की लोकप्रियता आदिवासियों पर पकड़ बरकरार, त्रिपुरा से संकेत

त्रिपुरा । राज्यों में शामिल है जहां पर वामपंथी दलों की जड़ें आज भी बहुत मजबूत हैं। वे यहां लंबे समय तक सत्ता में या सत्ता के भागीदार रहे हैं। गैर वामदलों के शासन में रहने पर वे यहां प्रमुख विपक्षी दलों में शामिल रहे हैं।

त्रिपुरा की दो विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के परिणाम सामने आ गए हैं। दोनों ही सीटों (बोक्सा नगर और धनपुर) पर भाजपा ने अच्छी जीत दर्ज की है। बोक्सा नगर सीट पर भाजपा ने २० साल से वामपंथी दल सीपीआईएम की पकड़ कमजोर करते हुए जीत हासिल की है। धनपुर विधानसभा आदिवासी बहुल मानी जाती है।

इस सीट पर भी भाजपा की जीत को महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। मणिपुर की घटनाओं के बाद नार्थ ईस्ट में पार्टी की स्थिति पर सवाल उठने लगे थे, लेकिन त्रिपुरा के इन दोनों नतीजों ने इन अनुमानों को गलत साबित किया है।

खास बात यह है कि बोक्सा नगर की सीट मुस्लिम बहुल है और वही यहां चुनावी समीकरण बदलने में निर्णायक भूमिका निभाते रहे हैं। मतदाताओं के इस समीकरण को ध्यान रखते हुए ज्यादातर पार्टियां भी यहां मुस्लिम प्रत्याशियों पर ही दांव लगाती हैं। भाजपा ने भी यहां मुस्लिम प्रत्याशी पर ही दांव लगाया था। यहां सीपीएम का दबदबा रहा है, लेकिन इस चुनावी परिस्थिति में बोक्सा नगर सीट पर भाजपा के मुस्लिम प्रत्याशी तफज्जुल हुसैन की जीत अहम मानी जा रही है।

वामपंथी गढ़ को तोड़ना भाजपा की बड़ी सफलता

त्रिपुरा उन चंद राज्यों में शामिल है जहां पर वामपंथी दलों की जड़ें आज भी बहुत मजबूत हैं। वे यहां लंबे समय तक सत्ता में या सत्ता के भागीदार रहे हैं। गैर वामदलों के शासन में रहने पर वे यहां प्रमुख विपक्षी दलों में शामिल रहे हैं। बोक्सा नगर सीट पर सीपीएम २००३ से ही काबिज रही है। ऐसे में इस सीट पर २० साल बाद भाजपा का परचम लहराना महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।

धनपुर भी वामपंथी गढ़, भाजपा ने बचाई सीट

धनपुर विधानसभा सीट पर भी भाजपा के बिंदु देबनाथ को जीत मिली है। भाजपा ने इस सीट पर भी सीपीएम के कौशिक चंद को हराया है। यह सीट भी १९७२ से २०१८ तक सीपीएम के कब्जे में रही है। पिछले चुनाव में भाजपा की प्रतिमा भौमिक ने इस सीट पर भाजपा की जीत का खाता खोला था। इस प्रकार भाजपा ने इस सीट पर अपना कब्जा बरकरार रखा है।

भाजपा ने कहा– त्रिपुरा की जीते विकासवादी सोच का नतीजा

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि देश में कुछ लोगों का ऐसा विशेष समूह है जो लगातार भाजपा के विरुद्ध अभियान चलाते रहते हैं। लेकिन त्रिपुरा उप चुनाव परिणामों ने यह बता दिया है कि भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आदिवासियों और मुसलमानों के बीच लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि मुस्लिम बहुल सीट बोक्सा नगर और आदिवासी बहुल सीट धनपुर पर भाजपा प्रत्याशियों की जीत उन लोगों को जनता का जवाब है और यह केंद्र सरकार के विकासवादी और सबको साथ लेकर चलने वाली सोच की जीत है।

श्रीवल्ली की पुष्मा

द रुल में पलट जाएगी किस्मत रश्मिका मंदाना ने शेयर की बड़ी अपडेट

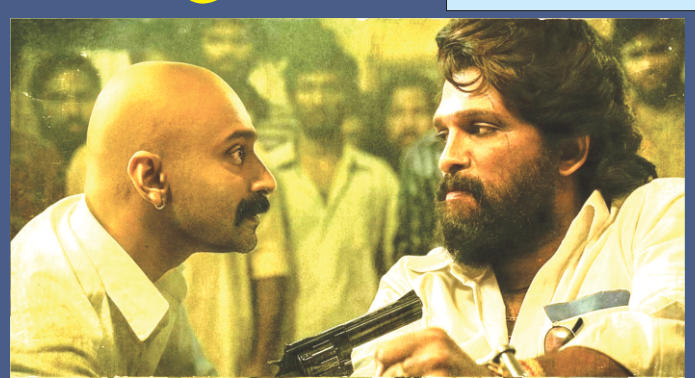

अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म पुष्मा द रुल का दर्शक पिछले काफी समय से इंतजार कर रहे हैं। अब मेकर्स फिल्म से जुड़ी अपडेट शेयर करने लगे हैं। हाल ही में अल्लू ने अपने लुक और शूटिंग से रुबरु करवाया था। वहीं अब रश्मिका मंदाना ने एक अपडेट शेयर की है।

नई दिल्ली। अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना स्टारर श्पुष्पा २रू द रूलश मोस्ट अवेटेड फिल्म है। फिल्म के पहले पार्ट श्पुष्पारू द राइजश ने जबरदस्त सफलता देखी थी। इसके साथ ही एक्टर अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना ने पैन इंडिया स्टार बन गए। वहीं, अब दर्शकों के बीच दूसरे पार्ट को लेकर एक्साइटमेंट बनी हुई है। इस बीच नेशनल क्रश रश्मिका मंदाना ने फिल्म के सेट से एक एक्सक्लूसिव अपडेट शेयर की है।पुष्पराज अल्लू अर्जुन के फैंस सीक्वल से जुड़ी हर छोटी- बड़ी अपडेट के लिए बेकरार रहते हैं। फैंस की इस बेकरारी को बनाए रखने के लिए श्रीवल्ली यानी रश्मिका मंदाना ने फिल्म के सेट से एक एक्सक्लूसिव तस्वीर साझा की हैं। फोटो में एक आलीशान घर नजर दिख रहा है, जो पुष्माः द रुल के ग्रैंड होने की ओर इशारा कर रहा है।

रानी बन राज करेगी राज श्रीवल्ली

रश्मिका मंदाना ने इंस्टाग्राम पर इस तस्वीर को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा- पुष्पा २ और साथ ही ब्लैक कलर की एक हार्ट इमोजी बनाई। अब इस घर में श्रीवल्ली रानी बनकर रहने वाली हैं या फिर मंजरा कुछ और है, ये तो रिलीज के साथ ही पता चलेगा।

पहले से भी ग्रैंड होगी पुष्पा 2

पुष्माः द रुल की शूटिंग तेजी से आगे बढ़ रही है। फिल्म कुछ महीनों बाद थिएटर्स में रिलीज होने वाली है। ऐसे में मेकर्स फिल्म को परफेक्ट बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। पुष्पा द राइज की सफलता के बाद मेकर्स ने वादा किया था कि अगला पुष्पा २ पहले से भी ज्यादा शानदार होगा और अब वो अपने इस वादे को निभाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

कब रिलीज होगी फिल्म ?

पुष्माः द रुल का निर्देशन सुकुमार ने किया हैं। फिल्म में अल्लू अर्जुन, रश्मिका मंदाना और फहद फासिल लीड रोल में हैं। पुष्माः द रुल का प्रोडक्शन माइथ्री मूवी मेकर्स और मुत्तमसेट्टी मीडिया मिलकर कर रही है। फिल्म अगले साल २२ मार्च को थिएटर्स में दस्तक दे सकती है।

रियल लाइफ में बेहद गार्जियस है जवान की ये ब्यूटी

जवान की इस हसीना ने जीता हर किसी का दिल, असल जिंदगी में बहुत खूबसूरत हैं ये ,सोशल मीडिया पर छाई शाह रुख खान की फिल्म की ये अदाकारा।

लेटेस्ट फिल्म जवान इस समय सुर्खियों में बनी हुई है। फिल्म की कहानी कमाई और स्टार कास्ट को लेकर हर तरफ जवान की चर्चा चल रही है। इस बीच हम आपको जवान की एक ऐसी एक्ट्रेस के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्होंने अपनी खूबसूरती की बदौलत हर किसी का ध्यान खींचा है।

नई दिल्ली । बालीवुड सुपरस्टार शाह रुख खान स्टारर फिल्म जवान इस समय सिनेमाघरों में जमकर धूम मचा रही है। साउथ के फेमस डायरेक्टर एटली के निर्देशन में जवान की कहानी, स्टार कास्ट और पहले दिन बाक्स आफिस पर रिकार्ड तोड़ कमाई की हर तरफ चर्चा हो रही है।

इस बीच हम आपको जवान की एक्ट्रेस आलिया कुरैशी के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने शाह रुख खान की इस धमाकेदार फिल्म में अपनी एक्टिंग और खूबसूरती से हर किसी की ध्यान खींचा है।

बेहद खूबसूरत हैं जवान की ये एक्ट्रेस

आलिया कुरैशी ने शाह रुख खान और नयनतारा स्टारर फिल्म जवान में जाह्वी का सपोर्टिंग रोल अदा किया है। जवान की जाह्वी ने यूं तो बालीवुड में ज्यादा अधिक फिल्मों को नहीं किया है, लेकिन शाह रुख की इस फिल्म में अपनी शानदार अदाकारी और ब्यूटी से आलिया ने हर किसी का दिल जीत लिया है। आलम ये है कि लोग आलिया कुरैशी को अब सोशल मीडिया पर जवान की जाह्वी के नाम से सर्च कर रहे हैं।इस बीच हम आपके लिए आलिया की ऐसी कुछ तस्वीरों को लेकर आए हैं जो ये साबित करने के लिए काफी हैं कि जवान की ये हसीना रियल लाइफ में बेहद गार्जियस है। इन फोटो में आप देख सकते हैं कि आलिया कुरैशी बीच पर ब्लैक बिकिनी में कितनी खूबसूरत लग रही हैं। एक्ट्रेस के चेहरे का नूर और कमसिन अदाओं से आप अपनी नजरों को नहीं हटा पाएंगे।

प्रभास की कल्कि 2898 एडी में राजामौली के बाद राम गोपाल वर्मा की एंट्री! निभाएंगे कैमियो रोल

एंटरटेनमेंट डेस्क। प्रभास की आने वाली बहुप्रतीक्षित फिल्म श्प्रोजेक्ट केश को भारतीय सिनेमा की सबसे महंगी परियोजनाओं में से एक माना जा रहा है, जिसका नाम कल्कि २८९८ एडी कर दिया गया है। श्कल्कि २८९८ एडीश प्रभास की बहुप्रतीक्षित साई-फाई फैंटेसी फिल्म है। यह फिल्म अपने प्रोडक्शन के अंतिम चरण के करीब है। श्कल्कि २८९८ एडीश की स्टारकास्ट और फिल्म से जुड़ी जानकारी फैंस की उम्मीदों को बढ़ा रहे हैं। फिल्म से जुड़ा नया अपडेट सामने आया है।

दरअसल, फिल्म में प्रभास के साथ दीपिका पादुकोण, अमिताभ बच्चन और कमल हासन मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। श्कल्कि २८९८ एडीश दीपिका पादुकोण की तेलुगु सिनेमा में पहली फिल्म है। अब फिल्म में एक और नाम शामिल हो गया है। दरअसल, कुछ दिनों पहले खबर आई थी कि फिल्म निर्देशक एसएस राजामौली का फिल्म में कैमियो रोल होगा। वहीं, अब एक और मशहूर निर्देशक फिल्म में कैमियो करते नजर आएंगे।

रिपोर्ट्स की मानें तो निर्देशक राम गोपाल वर्मा भी फिल्म में कैमियो रोल में नजर आएंगे। कथित तौर पर राम गोपाल वर्मा ने आगामी और बहुप्रतीक्षित फिल्म श्कल्कि २८९८ एडीश में अपनी भूमिका के लिए शूटिंग पूरी कर ली है। कल्कि २८९८ एडी में दिलचस्प कलाकारों की टोली है, जिसमें दुलकर सलमान, दिशा पटानी, पसुपति और अन्य प्रसिद्ध कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में होंगे। फिल्म को एक पौराणिक विज्ञान-फाई है, जिसे वैजयंती मूवीज द्वारा समर्थित किया जा रहा है और संगीत विभाग संतोष नारायणन द्वारा संभाला जा रहा है। बता दें कि इस फिल्म के टीजर में दिखाया गया था कि कैसे दुनिया भर में चारों तरफ अंधेरे का राज कायम हो गया है। लोगों को बंदी बना लिया गया है। बच्चे और बूढ़ों को भूखा रखा जा रहा है। लोगों के पास पानी को पानी नहीं है। लोगों को दिनदहाड़े मौत के घाट उतारा जा रहा है। इस बीच एक शख्स के हाथ में हनुमान जी की छोटी सी मूर्ति दिखाई देती है। लोग जैसे ही भगवान को याद करते हैं, प्रभास मसीहा बन उनकी मदद करने हाजिर हो जाते हैं। इस फिल्म में कमल हासन यकल्कि २८९८ एडी में मुख्य प्रतिद्वंद्वी के रूप में दिखाई देते हैं।

अमिताभ बच्चन के बाद सचिन तेंदुलकर को मिला गोल्डन टिकट, जय शाह ने विश्व कप के लिए किया आमंत्रित

सचिन तेंदुलकर 2011 में विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। क्रिकेट के सबसे बड़े टूर्नामेंट में उनका रिकॉर्ड शानदार रहा है। उन्हें 1992 से लेकर 2011 के बीच छह बार विश्व कप खेलने का मौका मिला। तेंदुलकर के नाम इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन हैं।

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत में वनडे विश्व कप का आयोजन पांच अक्तूबर से १६ नवंबर तक होना है। बीसीसीआई ने इस विश्व कप को खास बनाने के लिए एक मुहिम चलाई है। उसने देश की नामचीन हस्तियों को विश्व कप देखने के लिए आमंत्रित करना शुरू किया है।

इस मुहिम का नाम गोल्डन टिकट फार इंडिया आइकान्स है। इसके तहत अलग-अलग क्षेत्रों में काम करने वाले दिग्गजों को विश्व कप के मैच देखने के लिए गोल्डन टिकट दिया जा रहा है। इस लिस्ट में बालीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन के बाद क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर का नाम भी जुड़ गया है।

बीसीसीआई ने (आठ सितंबर) को एक्स (पहले ट्विटर) पर यह जानकारी दी है कि बोर्ड के सचिव जय शाह ने तेंदुलकर को गोल्डन टिकट दिया। बीसीसीआई ने लिखा, क्रिकेट और देश के लिए एक गौरवशाली क्षण!

हमारे गोल्डन टिकट फार इंडिया आइकान्स कार्यक्रम के हिस्से के रूप में बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने भारत रत्न सचिन तेंदुलकर को गोल्डन टिकट

प्रदान किया। राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक सचिन तेंदुलकर की यात्रा ने पीढ़ियों को प्रेरित किया है। अब वह आईसीसी क्रिकेट विश्व कप २०२३ का हिस्सा होंगे और लाइव मैच देखेंगे।

तेंदुलकर के नाम विश्व कप में सबसे ज्यादा रन

तेंदुलकर २०११ में विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। क्रिकेट के सबसे बड़े टूर्नामेंट में उनका रिक र्ड शानदार रहा है। उन्हें १९९२ से लेकर २०११ के बीच छह बार विश्व कप खेलने का मौका मिला। तेंदुलकर के नाम इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन हैं। उन्होंने ४५ मैचों की ४४ पारियों में २२७८ रन बनाए हैं। सचिन का औसत ५६.९५ का रहा है। उन्होंने छह शतक और १५ अर्धशतक लगाए। विश्व कप में १५२ रन उनका उच्चतम स्कोर रहा।

अमिताभ बच्चन के लिए बीसीसीआई ने क्या लिखा था?

बीसीसीआई ने अमिताभ बच्चन और जय शाह की तस्वीर छह सितंबर को पोस्ट की थी। तब उसने लिखा था, हमारे गोल्डन आइकान्स के लिए गोल्डन टिकट! बीसीसीआई के सचिव जय शाह को सुपरस्टार श्री अमिताभ बच्चन को हमारा गोल्डन टिकट पेश करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक महान अभिनेता और एक समर्पित क्रिकेट प्रेमी, अमिताभ बच्चन का टीम इंडिया के प्रति अटूट समर्थन हम सभी को प्रेरित करता रहता है। हम आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप २०२३ में उनके शामिल होने से रोमांचित हैं।

पिता बनने के बाद टीम इंडिया से जुड़े जसप्रीत बुमराह

शुरू किया अभ्यास, रविवार को पाकिस्तान से है मैच

स्पोर्ट्स डेस्क। बुमराह हाल ही में पिता बने हैं, उनके घर बेटे का आगमन हुआ है, जिसका नाम अंगद रखा गया है। पिता बनने के बाद बुमराह टीम इंडिया के साथ जुड़ चुके हैं और पाकिस्तान के खिलाफ मैच में खेलेंगे।

भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज जसप्रीत बुमराह टीम इंडिया के साथ जुड़ चुके हैं। बुमराह एशिया कप २०२३ में नेपाल के खिलाफ मैच में टीम इंडिया के लिए नहीं खेले थे। वह पहली बार पिता बने हैं। उनके घर बेटे का जन्म हुआ है, जिसका नाम अंगद रखा गया है। अपने बच्चे को देखने के लिए वह श्रीलंका से मुंबई आए थे और अब पाकिस्तान के खिलाफ मैच से पहले टीम के साथ जुड़ गए हैं।

बुमराह लंबे समय बाद भारतीय टीम में वापसी कर रहे हैं। पिछले साल अ स्ट्रेलिया के खिलाफ टी२० मैच में खेलने के बाद वह लगभग एक साल बाद आयरलैंड के खिलाफ टी२० सीरीज में खेले। हालांकि, अब एक साल भी ज्यादा समय के बाद कोई वनडे मैच खेलेंगे। पाकिस्तान के खिलाफ मैच में बुमराह टीम में थे, लेकिन उन्हें गेंदबाजी करने का मौका नहीं मिला था।

कोलंबो में मैच के दौरान बारिश के आसार

भारत और पाकिस्तान के बीच यह मुकाबला श्रीलंका की राजधानी कोलंबो स्थित आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेला जाना है। कोलंबो में पिछले कुछ दिनों से लगातार बारिश हो रही है। यहां तक कि उससे मैचों की मेजबानी वापस लेने की भी बात हो रही थी। माना जा रहा था कि मैचों को हंबनटोटा या दांबुला में शिफ्ट कर दिया जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब एशिया कप के बचे सारे मुकाबले यहीं खेले जाएंगे।

एशिया कप के मौजूदा संस्करण में भारत और पाकिस्तान के बीच दूसरा मुकाबला रविवार को खेला जाएगा। दोनों टीमों के बीच दो सितंबर को ग्रुप राउंड में मैच खेला गया था, लेकिन वह वह बारिश के कारण रद्द हो गया था। मजेदार बात यह है कि भारत-पाकिस्तान मैच सुपर-४ में एकमात्र ऐसा मुकाबला है जिसके लिए रिजर्व डे वाला रखा गया है। सुपर-४ के किसी अन्य मैच के लिए यह सुविधा नहीं होगी। इसके अलावा १७ सितंबर को होने वाले फाइनल के लिए एक रिजर्व डे है।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

वनडे विश्व कप के पहले मुकाबले के लिए अंपायरों के नाम का एलान

टूर्नामेंट में शामिल होंगे कुल 16 अंपायर

स्पोर्ट्स डेस्क। वनडे विश्व कप में कुल १६ अंपायर शामिल होंगे। पहले मैच में दो एशियाई अंपायर मैदान में नजर आएंगे। आईसीसी इमर्जिंग अंपायर पैनल के भी चार सदस्य विश्व कप में अंपायरिंग करेंगे। आईसीसी ने वनडे विश्व कप २०२३ के पहले मुकाबले के लिए अंपायरों के नाम का एलान कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने शुक्रवार को बताया कि भारत के नितिन मेनन और कुमार धर्मसेना पांच अक्तूबर को इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच विश्व कप के पहले मैच में अंपायरिंग करेंगे। पूर्व तेज गेंदबाज जवागल श्रीनाथ इस मुकाबले के मैच रेफरी होंगे। अहमदाबाद में खेले जाने वाले टूर्नामेंट के पहले मैच में प ल विल्सन टीवी अंपायर और और सैकत चौथे अंपायर होंगे। टूर्नामेंट के १३वें संस्करण में सोलह अंपायर अंपायरिंग करेंगे, जिसमें आईसीसी के एमिरेट्स एलीट पैनल के सभी १२ अंपायर और आईसीसी इमर्जिंग अंपायर पैनल के चार सदस्य शामिल हैं।

सूची में ल र्ड्स में २०१९ के फाइनल के लिए नियुक्त किए गए चार अंपायरों में से तीन - धर्मसेना, मराइस इरास्मस और राड टकर शामिल हैं। इस सूची से केवल अलीम डार गायब हैं, जिन्होंने इस साल मार्च में एलीट पैनल से इस्तीफा दे दिया था। मैच रेफरी के रूप में वनडे विश्व कप २०२३ के लिए आईसीसी एलीट पैनल में पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर जेफ क्रो, एंडी पाइक्र फ्ट, रिची रिचर्डसन और श्रीनाथ शामिल हैं। लीग स्टेज के सभी मुकाबलों के लिए अधिकारियों को नामित कर दिया गया है, साथ ही टूर्नामेंट के सेमीफाइनल और फाइनल के चयन की घोषणा भी उचित समय पर की जाएगी।

आईसीसी के महाप्रबंधक वसीम खान ने कहा, "इतने बड़े आयोजन के लिए आपको हर स्तर पर उच्च प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। अंपायरों, रेफरी और अंपायरों के उभरते समूह का आईसीसी एलीट पैनल इस विश्व कप में अपार कौशल, अनुभव और विश्व स्तरीय मानक लाएगा। हम इस टूर्नामेंट के लिए बना गए समूह से खुश हैं। विश्व कप के लिए अंपायरों की लिस्टः क्रिस ब्राउन, कुमार धर्मसेना, मराइस इरास्मस, क्रिस गैफनी, माइकल गाफ, एड्रियन होल्डस्ट क, रिचर्ड इलिंगवर्थ, रिचर्ड केटलबोरो, नितिन मेनन, अहसान रजा, पाल रीफेल, शरफुद्दौला इब्ने शैद, राड टकर, एलेक्स व्हार्फ, जोएल विल्सन और पाल विल्सन।